हिंदी
विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 29 March - 04 April 2026

स्थापित विमर्शों को तोड़ती फिल्म

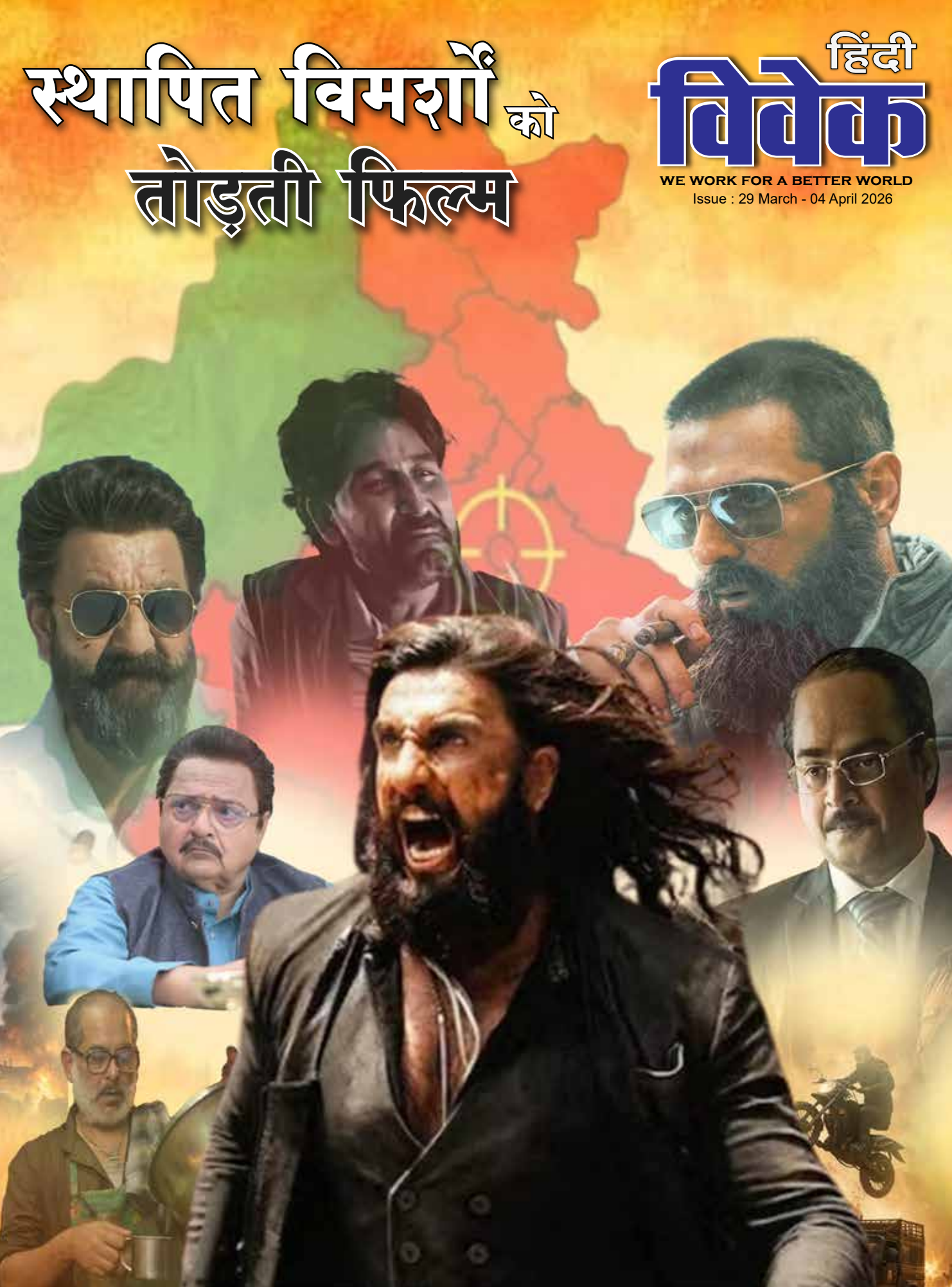

Vipin Aggarwal
THE SAFFRON EXPERT™

केसर तिलक–एक अज्ञात रहस्य

केसर तिलक

केसर तिलक आध्यात्मिकता, परम्परा और स्वास्थ्य का एक सुंदर मिश्रण है। यह शुद्ध और पवित्र गंगाजल के साथ शुद्ध केसर से बना है। तिलक आंतरित ऊर्जा को जाग्रत करने, मन की रक्षा करने, स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और आध्यात्मिक के प्रतीक के रूप में लगाया जाता है।

माथे, गले और नाभि पर केसर तिलक लगाना आयुर्वेद और आध्यात्मिक परम्पराओं में निहित एक प्राचीन प्रथा है। प्रत्येक बिंदू को शरीर में एक शक्तिशाली ऊर्जा केंद्र माना जाता है और केसर स्वयं औषधीय और आध्यात्मिक महत्व रखता है। प्रत्येक क्षेत्र के लाभ इस प्रकार हैं–

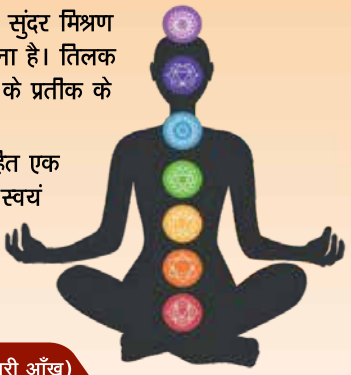

केसर तिलक के अद्भुत लाभ

1. माथा आज्ञा चक्र (तीसरी आँख)
- अंतर्ज्ञान, एकाग्रता और बुद्धि का केंद्र
- ऊर्जा को संतुलित करता है और ध्यान शक्ति बढ़ाता है

2. कान
- सतर्कता, जागरुकता और ग्रहणशीलता का प्रतीक
- कानों के पास केसर तिलक लगाने से श्रवण–एकाग्रता और संतुलन बढ़ता है

3. कंठ–विशुद्धि चक्र
- संवाद कौशल्य, आत्मविश्वास और स्व–अभिव्यक्ति को बढ़ाता है
- स्पष्ट संवाद, आंतरिक सत्य और आत्मविश्वास को सशक्त करता है

4. नाभि
- नाभि को शरीर का ऊर्जा केंद्र माना जाता है
- यहाँ केसर तिलक लगाने से शरीर को पोषण मिलता है, पचनशक्ति बढ़ाता है और आंतरिक अंगों की रक्षा होती है

ज्योतिष के अनुसार, केसर तिलक बृहस्पति (ज्ञान, धन, आध्यात्मिकता), बुध (बुद्धि, वित्त, संचार), केतु (बोध, अंतर्ज्ञान, शांति) और मंगल (साहस, शक्ति) की ऊर्जा को संतुलित करता है। प्रसिद्ध लाल किताब में केसर और केसर तिलक से संबंधित अनेक उपाय बताए गए हैं।

लगातार तीन से छह महीनों तक केसर तिलक लगाने से जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देते हैं और यह समृद्धि की सिद्ध कुंजी है। केसर तिलक से अपने दिन की शुरुआत करें।

GROCERIES IMPEX : +91-9999092561, 9650635204 | vipin@groceriesimpex.com
Registered Office Address : R-49, Rita Block, Shakarpur, Delhi-110092.
Packing Unit : D-94/A, Matiala Extension, Dwarka, New Delhi-110059.

अनुक्रमणिका

धुरंधर 2: हर किरदार दमदार	विष्णु शर्मा	04
सिनेमा की दशा व दिशा बदलती धुरंधर	अतुल गंगवार	06
भक्ति योग और कर्म योग के सर्वोच्च आदर्श हनुमान	ललित गर्ग	09
समाज को बनना होगा जामवंत	डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'	11
विश्व को टकराव नहीं सद्भाव की आवश्यकता	राघव झा	13
युद्ध के दुष्परिणाम और समाधान	रंजीत कुमार	16
आपदा में अवसर लेकर आए सिलेंडर	मुकेश जोशी	18
सामाजिक समरसता का प्रतीक: शोभायात्रा	डॉ. नीतू गोस्वामी	19
सुविधाओं के पिंजरें में छिपी मौत	योगेश कुमार गोयल	20
त्याग, करुणा और अहिंसा का संदेश	लवकुश तिवारी	23
महासंग्राम का बजा बिगुल	प्रवीण सिन्हा	24
एक भारतीय आत्मा फिर याद आए	संकलन	25
नजर उतारने की प्राचीन परम्पराएं	उषा शर्मा 'प्रिया'	26
सुरों के गहरे साधक हरिहरन	डॉ. राकेश भट्ट	28
समाचार	हिंदी विवेक	29

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

विष्णु शर्मा

'धुरंधर 2' फिल्म में प्रत्येक कलाकार ने अपने अभिनय से जान डाल दी है, जो फिल्म को मजबूती देती है। उनके संवाद सहज ही दर्शकों में रोमांच पैदा कर रहे हैं।

धुरंधर 2

हर किरदार दमदार

धुरंधर कई पीढ़ियां 'शोले' देखते बड़ी हुई हैं, ऐसे में उन्होंने फिल्म के सभी सीन्स इतनी बार देखे हैं कि डायलॉग्स तक जुबान पर चढ़ गए हैं। शोले के पात्र भी ऐसे रचे गए थे कि उनके नाम पर फिल्में तक बन गईं, कभी जय-वीरू, गब्बर, बसंती, सूरमा भोपाली आदि पर फिल्मों के नाम ढूंढकर देखिए, आज भी लोग अरे ओ साम्भा, तेरा क्या होगा कालिया, बसंती इन कुत्तों के सामने मत नाचना, हमारा नाम सुरमा भोपाली ऐसे ही नहीं है, ये हाथ हमें दे दो ठाकुर जैसी लाइनें उनके पात्रों से जोड़कर याद रखते हैं। अब 'जेन जी की शोले' आ गई है, धुरंधर सीरीज। 'धुरंधर 2' ने तो लोकप्रियता से लेकर कमाई तक के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। ऐसे में उनके पात्रों की भी चर्चा होगी। नायक, नायिका और

मुख्य खलनायक के अलावा भी फिल्म में कई ऐसे पात्र थे, जिनके बिना 'धुरंधर 2' की चर्चा अधूरी है।

इनमें सबसे ज्यादा जो चर्चित नाम है वो है जमील जमाली यानी राकेश बेदी का। उनका चर्चित संवाद 'बच्चा है तू मेरा' को ना केवल दिल्ली पुलिस ने बल्कि कई ब्रांड्स ने उठा लिया है। दिल्ली पुलिस ने तो उनके मीम्स से सड़क सुरक्षा का अभियान ही शुरू कर दिया है, एक मीम है 'बच्चा है तू मेरा, ये ले हेलमेट पहन'। अब तक अप्सरा आइसक्रीम, वॉडीलाल, हल्दीराम, कैश करो, राजस्थान टूरिज्म, यूनियन बैंक, बुक माई शो, टी-सीरीज, बोन, ट्रेवोलेक्स, बिस्ट्रो बाय ब्लिंकिट आदि कई कम्पनियां उनके मीम बना चुकी हैं।

'आज बरेली का ये जेबकतरा भी देश पर शहीद होगा' फिल्म में मौत से पहले आलम (गौरव गेरा) का ये संवाद लोगों के दिलों में बैठ गया। गौरव गेरा यूं तो इंडस्ट्री का पुराना चेहरा हैं, लेकिन इस रोल में जिसमें कि उनका लुक भी काफी अलग था, लोगों ने काफी पसंद किया।

जसकीरत रंगी के जिगरी दोस्त गुरबाज पिंडा यानी उदयबीर संधू ने पहले सीन से ही लोगों को दिलों में जगह बना ली थी। फिल्म के दूसरे हिस्से में जब वो एक ड्रग तस्कर के रूप में लौटे तो एक नए ही रूप में थे। बाथरूम में उनकी मौत का सीन 3 दिन में शूट हो पाया था और इस दौरान वह एक पल के लिए नहीं सोए। आदित्य धर ने उस सीन के बाद संधू को कहा था कि 'तुम्हें नहीं पता कि तुमने क्या कर दिया है।' इस फिल्म में पिंडा की तरह ही दो नए दमदार पात्र भी मैदान में उतारे गए हैं। इनमें से एक था बड़े साहब यानी दाऊद इब्राहिम का रोल और दूसरा था अतीक अहमद का रोल। दाऊद की भूमिका में दानिश इकबाल का लुक ऐसा था कि लोग पहचान ही नहीं पाए, लेकिन अब हर कोई उनके साथ सेल्फी लेकर 'बड़े साहब' लिख रहा है, जबकि दानिश को बहुत बाद में पता चला था कि उनका रोल तो दाऊद का है। वहीं सबसे ज्यादा पसंद किया गया आतिफ अहमद (अतीक) का पात्र, सलीम सिद्दीकी ने अतीक का लुक ही नहीं ठेठ गंवईपन भी ऐसा उतारा है कि अनेक बेवसीरीज-फिल्मों के बाद भी उन्हें पहचान नहीं मिली थी, जो अब 51 साल की आयु में मिली है।

बिना मेजर इकबाल के पिता ब्रिगेडियर जहांगीर यानी सुविंदर विकी के रोल के 'धुरंधर 2' में मजा नहीं आता। हर समय मुंह से अपने बेटे के लिए निकलती गालियां और 71 के युद्ध की फर्जी बहादुरी के किस्से। इस रोल के जरिए आदित्य धर ने पाक जनरलों के सीने पर लटकते मैडल्स की कलई खोल दी। विकी खुश है कि लोग मूवी देखते समय गालियां दे रहे थे। एक खामोश पात्र भी याद रखने वाला है, वो है हमजा के सहयोगी रिजवान का, बलिष्ठ कदकाठी के मुस्तफा अहमद ने चुप रहकर भी धुरंधर 2 में अपनी छाप छोड़ी है। वहीं छोटे परदे की गोरी भाभी कुछ सेकंड्स के लिए फिर परदे पर आई हैं, हमजा के मुंह पर एक जोरदार तमाचा मारने के लिए। उन्हें अक्षय और रणवीर को थप्पड़ लगाने के लिए याद रखा जाएगा।

रिजवान जैसा ही शांत पात्र था बलूचों का सरदार शिरानी यानी बिमल ओबेरॉय। जो फिल्म के क्लाइमेक्स में बड़ी भूमिका निभाता है, लेकिन उनसे ज्यादा चर्चा एसपी असलम को उड़ाने वाले सुसाइड बॉम्बर की हो रही है, 1 मिनट के रोल में उसके चेहरे के भावों का आक्रोश प्रभावी था। उसी तरह मानव गोहिल अजय सान्याल के सहयोगी सुशांत की भूमिका में सपाट चेहरे के साथ अभिनय करते हैं। राज जुत्शी पाक के लेफ्टिनेंट जनरल शमशाद की भूमिका में हैं, लेकिन उनका लुक और मुद्राएं शहबाज शरीफ सरीखी हैं।

आदित्य धर की तरह कुछ 'धर' कलाकार भी 'धुरंधर 2' में थे। जैसे असलम पप्पू की भूमिका अश्विन धर ने की थी। जमील जमाली की बीवी शबनम की भूमिका में गीतिका गंजू धर थीं। नवाज शफीक (शरीफ) की भूमिका में प्रसिद्ध अमरोही भी काफी चर्चा में हैं क्योंकि शक्ल हूबहू मिल रही थी। जरदारी के रोल में संजय महांद्रित्ता थे। एक दिलचस्प भूमिका जहूर मिस्त्री की विवेक सिन्हा ने निभाई, जिस तरह लाइव चैट में अजय सान्याल उनसे भारत मां की जय बुलवाते हैं, वो सीन भी चर्चा में है। अरशद पप्पू के छोटे भाई का नाम यासिर अराफात ही चर्चा का विषय था, जो अभय अरोरा ने निभाई, जबकि काफी ताकतवर भूमिका नकली नोटों-हथियारों के सौदागर जावेद खनानी की भी रही, इसकी भूमिका में अंकित सागर थे। एएसपी ओमर हैदर का पात्र भी एकदम असली था, आदित्य उप्पल ने उसकी भूमिका निभाई और जसकीरत रंगी का खेल जैसे खत्म ही कर दिया था।

कम चर्चा में यूपी के पूर्व डीजीपी प्रशांत कुमार की भूमिका भी नहीं है, उनके रोल में हिमांशु गोखानी को उनके जैसी मूंछों के लुक के चलते ही लिया गया था। असली आतंकियों के नाम वाले रोल भी रखे गए थे, मुंबई 26/11 और ट्रेन बॉम्बिंग में शामिल आजम चीमा के रोल में विनोद थरानी थे तो साजिद मीर की भूमिका फैज खान ने की थी। राजेश डोगरा को अब्दुल रहमान मक्की की भूमिका निभाने का अवसर मिला था। ●●●

सिनेमा की दशा व दिशा बदलती धुरंधर

अतुल गंगवार

आम भारतीय ने ये बता दिया है कि यदि सच कहना और दिखाना प्रोपेगंडा है तो उन्हें गर्व है कि वो ऐसे प्रोपेगंडा का हिस्सा हैं। 'धुरंधर' उन करोड़ों लोगों के दिल की आवाज है जो गर्व से कहते हैं 'भारत माता की जय, वंदे मातरम'...।

विमर्श

भारतीय सिनेमा इस समय चर्चा का विषय बना हुआ है। कारण है निर्देशक आदित्य धर की फिल्म 'धुरंधर' दो भागो में प्रदर्शित 7 घंटे से भी बड़ी (भाग एक 3 घंटे 25 मिनट और भाग दो 3 घंटे 49 मिनट) इस फिल्म ने भारतीय सिनेमा की दशा और दिशा दोनों बदल दी है। इस फिल्म की धुरंधर सफलता ने बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचा दिया है। साथ ही जन्म दिया है एक ऐसी चर्चा को जिस पर सिनेमा देखने वाले दो भागों में बंट गए हैं। एक वर्ग 'धुरंधर' को प्रोपेगंडा फिल्म बताकर उसे नकार रहा है, वहीं दूसरा वर्ग इस फिल्म में वर्तमान भारत का सशक्त रूप देख रहा है। एक ऐसा रूप जो कदाचित् इससे पहले भारतीय सिनेमा में नहीं देखा गया। दिसम्बर 2025 में जब धुरंधर प्रदर्शित हुई थी तो भारतीय सिनेमा के सो काल्ड चैम्पियनों का गैंग सुनियोजित ढंग से इस फिल्म को अनदेखा करने में लग गया। एक ऐसा वर्ग जो लगातार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर सिनेमा का प्रयोग अपना प्रोपेगंडा चलाने में कर रहा था वो बर्दाश्त ही नहीं कर पाया कि कोई 'धुरंधर' बनाकर उन्हें उनके ही बनाए जाल में फंसा देगा। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के चैंम्पियनों को जब वर्षों से बनाए अपने साम्राज्य पर हमला होता हुआ दिखा तो सब अपने बिलों से निकल आए, लेकिन इस बार दर्शकों ने कमान अपने हाथ में ले ली थी। 'धुरंधर' के पहले भाग ने 1300 करोड़ से अधिक का व्यवसाय बॉक्स ऑफिस पर करके अनेक आलोचकों के मुंह पर तमाचा जड़ दिया। 'धुरंधर 2- द रिवेंज' ने 7 दिनों में ही बॉक्स ऑफिस पर 1000 करोड़ से अधिक का व्यवसाय कर लिया है और अभी भी ये रुक नहीं रही है। सफलता के नए आयाम लिख रही है। सिनेमा के क्राफ्ट की बात करें तो ये एक विश्वस्तरीय फिल्म है। कंटेंट की बात करें तो देश भक्ति का ऐसा पैकेज है जो हर भारतीय (यहां मैं उनकी बात नहीं कर रहा हूं जो खाते यहां का हैं और सपने कहीं और के देखते हैं) को गौरवान्वित कर रहा है। फिर उन्होंने ये कहना शुरु कर दिया कि फिल्म में हिंसा और अभद्र भाषा का प्रयोग किया गया है। जब इस पर भी दर्शकों ने फिल्म को प्यार देना नहीं छोड़ा तो इस वर्ग ने एक नया पैतरा अपनाया है कि 'धुरंधर' एक प्रोपेगंडा फिल्म है जिसे वर्तमान सरकार ने अपने चुनावी लाभ के

लिए बनवाया है। यहां ये प्रश्न उठता है कि क्या 'धुरंधर' देश की पहली प्रोपेगंडा फिल्म है? क्या इससे पहले कभी कोई फिल्म ऐसी नहीं बनी जिसमें प्रोपेगंडा ना हो?

सिनेमा माध्यम का सदुपयोग या दुरुपयोग एक विशेष विचारधारा के लोग भारत में हमेशा से करते आए हैं और ये काम केवल भारत में होता हो ऐसा नहीं है। अनेक देश अपनी बात को कहने के लिए करते रहे हैं। वर्षों तक पैरेलल सिनेमा के नाम पर भारत का दारिद्रय विश्व में बेचा जाता रहा है। वर्ग संघर्ष, जाति संघर्ष आदि को सामाजिक बुराई के नाम पर भारत की छवि धुमिल करने का काम किया जाता रहा है। काल्पनिक कहानियों को ऐतिहासिकता की आड़ में पेश करके जोधाबाई- अकबर की फर्जी प्रेम कहानी रची गई। कहानियों में सनातन को बदनाम करने के लिए ऐसे किरदार गढ़े गए जिनको देख कर आम आदमी स्वयं से घृणा करने लगे। देश की स्वतंत्रता के इतिहास को इस तरह से दिखाया गया कि देश के विभाजन के लिए जिम्मेदार कौम आज स्वतंत्रता की लड़ाई का, भारत की स्वतंत्रता के श्रेय लेती है और हम अपने ऊपर अत्याचार करने वाले मुगल शासकों का महिमा मंडन करने वाले इतिहास को पढ़ कर कृतार्थ होते रहे हैं और आज भी हो रहे हैं। ये सब दिखाते समय इन लोगों को इनमें छुपा प्रोपेगंडा नहीं दिखाई दिया था क्या? सच तो ये हैं कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर जिस तरह का विष फिल्मों द्वारा हमारे देश के स्वभिमान, संस्कृति, परम्पराओं के प्रति फैलाया गया है और फैलाया जा रहा है वो किसी प्रोपेगंडा से कम नहीं है। आखिर क्या कारण है कि 'चक दे इंडिया' में मीर रंजन नेगी की कहानी, उनका संघर्ष एक फर्जी कबीर खान का संघर्ष बन जाता है। आखिर क्या कारण है कि 'मैं हूं ना' में एक हिंदू फौजी को आतंकी बताकर हिंदू आतंकवाद का नैरेटिव बनाने का प्रयास किया जाता है। एक लम्बी सूची है फिल्मों की, जिसमें देश के स्वाभिमान को ठेस पहुंचाने वाले नेरेटिव को स्थापित करने का काम हुआ है। 'पठान', 'जवान', 'एक था टाइगर' जैसी फिल्में क्या कहना चाहती थी? एक आतंकवादी देश पाकिस्तान के साथ मिल कर भारत के नायक विश्व शांति स्थापित कर रहे थे, गजब है। 'धुरंधर' और 'धुरंधर 2 द रिवेंज' ने 2014 के बाद बदले हुए भारत की नब्ज को पहचाना है। ये उस भारत का उत्तर है जो डरता नहीं है, घुस कर मारता है। 'कश्मीर फाइल्स', 'द केरला स्टोरी', 'ताशकंद फाइल्स', 'वैक्सीन वॉर', 'उरी द सर्जिकल स्ट्राइक', 'बस्तर', 'केरला स्टोरी-2' जैसी फिल्मों की सफलता ने धुरंधर जैसी फिल्मों के लिए रास्ता खोला है। 'दृष्टि वही है, लेकिन 'दृष्टिकोण' बदल गया है। आप कितना ही प्रोपेगंडा इन फिल्मों के विरुद्ध कर लें, लेकिन जनता सब समझ रही है या यूं भी कह सकते हैं कि वो समझ गई है।

●●●

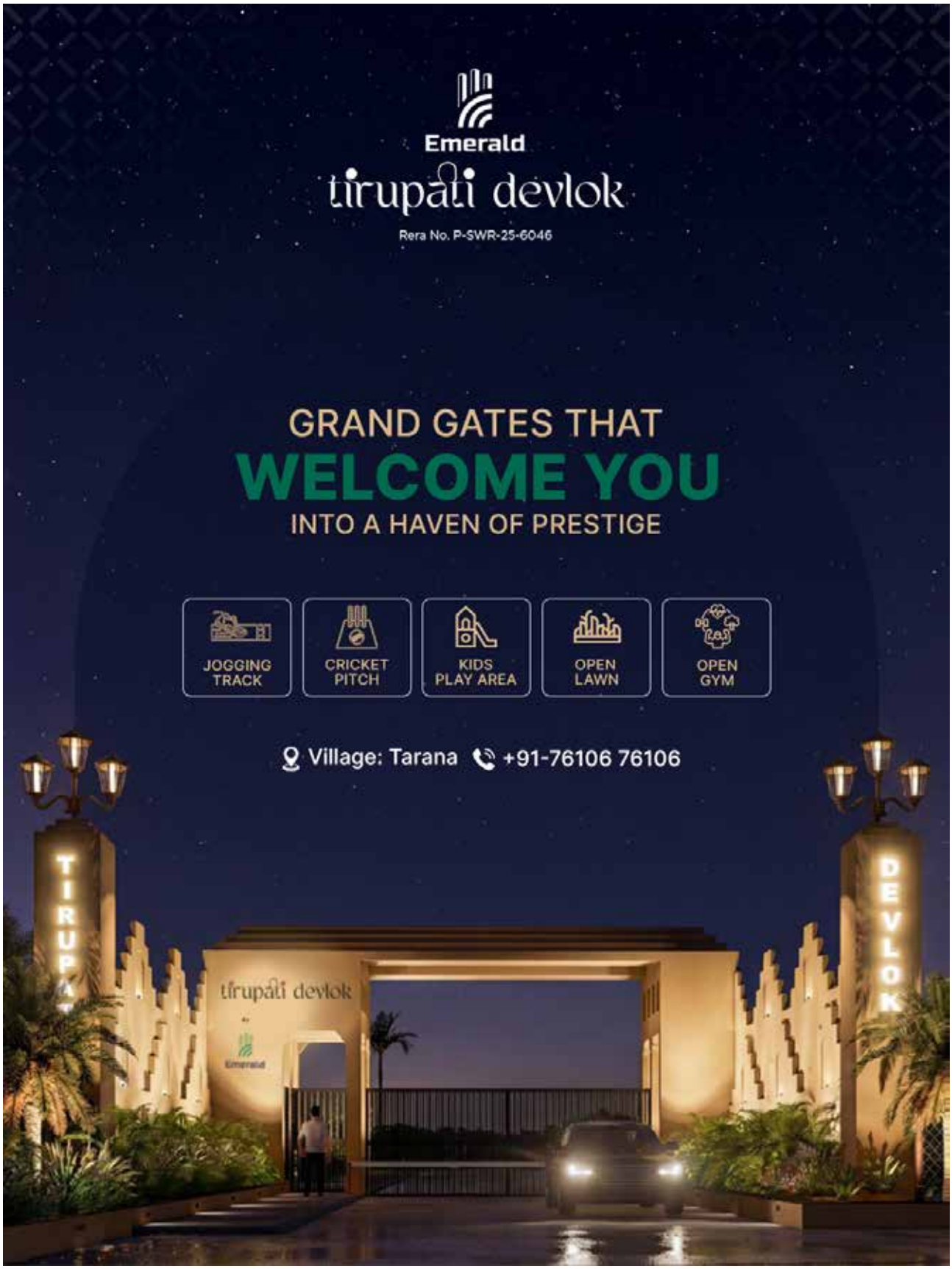
Emerald
tirupati devlok
Rera No. P-SWR-25-6046
GRAND GATES THAT
WELCOME YOU
INTO A HAVEN OF PRESTIGE
JOGGING TRACK
CRICKET PITCH
KIDS PLAY AREA
OPEN LAWN
OPEN GYM
Village: Tarana
+91-76106 76106
TIRUPATI
DEVLOK
tirupati devlok

ललित गर्ग

योग केवल शरीर को स्वस्थ ही नहीं रखता बल्कि यह जीवन जीने की कला है। जिसका जीवंत उदाहरण हैं भगवान हनुमान। हनुमानजी को महान योगी इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनका मन, बुद्धि और शरीर पूर्ण रूप से नियंत्रित है। वे शक्ति के भी प्रतीक हैं, भक्ति के भी प्रतीक हैं और योग के भी प्रतीक हैं।

हनुमान जयंती विशेष

भक्ति योग और कर्म योग के सर्वोच्च आदर्श हनुमान

भगवान हनुमान भारतीय संस्कृति में केवल शक्ति, पराक्रम और साहस के प्रतीक ही नहीं हैं बल्कि वे भक्ति योग, कर्म योग और राजयोग के अद्भुत समन्वय के सर्वोच्च आदर्श भी हैं। उनके जीवन को केवल एक वीर योद्धा के रूप में देखना अधूरा दृष्टिकोण है। हनुमान का सम्पूर्ण जीवन योगमय है- उनकी भक्ति में योग है, उनकी सेवा में योग है, उनके विचार में योग है और उनके कर्म में योग है। वे ऐसे योगी हैं जिनके लिए भक्ति ही योग है और सेवा ही साधना है।

हनुमानजी की भक्ति का मूल तत्व है निस्वार्थ प्रेम। उन्होंने भगवान राम की भक्ति किसी स्वर्ग, मोक्ष या सिद्धि के लिए नहीं की बल्कि केवल प्रेम और समर्पण के कारण की, यही सच्चा भक्ति योग है। भक्ति योग का अर्थ केवल भजन-कीर्तन करना नहीं बल्कि अपने अहंकार का पूर्ण विसर्जन कर देना है। हनुमानजी ने स्वयं कहा था- जब मैं शरीर भाव से देखता हूं तो मैं आपका सेवक हूं, जब मैं जीव भाव से देखता हूं तो मैं आपका अंश हूं और जब मैं आत्मभाव से देखता हूं तो आप और मैं एक ही हैं। यह भक्ति योग की सर्वोच्च अवस्था है, जहां भक्त और भगवान में भेद समाप्त हो जाता है।

हनुमानजी का कर्म योग भी उतना ही महान है। उन्होंने जीवन भर केवल कार्य किया, कभी फल की इच्छा नहीं की। लंका जाना, सीता माता की खोज करना, संजीवनी लाना, रामसेतु निर्माण में सहयोग देना- ये सभी कार्य उन्होंने बिना किसी श्रेय की इच्छा के किए। उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि मैंने यह कार्य किया। उनका जीवन गीता के निष्काम कर्म योग का जीवंत उदाहरण है। कर्म करते जाओ, फल की चिंता मत करो- हनुमानजी का सम्पूर्ण जीवन इसी सिद्धांत पर आधारित है।

हनुमानजी को महान योगी इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनका मन, बुद्धि और शरीर पूर्ण रूप से नियंत्रित है। वे बलवान है, लेकिन उनका बल अहंकार में नहीं बदला। वे विद्वान है, लेकिन उनकी विद्वता अहंकार में नहीं बदली। वे शक्तिशाली है, लेकिन उनकी शक्ति विनाश में नहीं, सेवा में लगी। यही योग है- शक्ति का संयमित उपयोग, ज्ञान का विनम्र उपयोग और कर्म का निष्काम उपयोग।

हनुमानजी का अधिकांश समय प्रभु राम की भक्ति और योग साधना में ही व्यतीत होता है। उनका ध्यान, उनकी साधना, उनका जप, उनका तप- सब राममय है। उनके लिए योग का अर्थ जंगल में बैठकर ध्यान करना भर नहीं है बल्कि जीवन के प्रत्येक कर्म को ईश्वर को समर्पित करना है। वे चलते हैं तो राम के लिए, बोलते हैं तो राम के लिए, युद्ध करते हैं तो राम के लिए और जीते हैं तो राम के लिए। यही कर्म योग और भक्ति योग का अद्भुत समन्वय हैं।

हनुमानजी की योग दृष्टि का एक अद्भुत उदाहरण महाभारत

युद्ध में मिलता है। महाभारत युद्ध के दौरान वे अर्जुन के रथ की ध्वजा पर विराजमान थे। यह केवल एक प्रतीकात्मक घटना नहीं थी बल्कि इसका गहरा आध्यात्मिक अर्थ है। हनुमान वहां केवल ध्वज पर बैठे नहीं थे बल्कि वे सम्पूर्ण युद्ध को योग दृष्टि से देख रहे थे। वे अर्जुन के साहस, धैर्य और मनोबल के रक्षक थे। योग का अर्थ ही है-समत्व भाव, संतुलन और सही दृष्टि। हनुमानजी उस युद्ध में शक्ति, धैर्य और संतुलन के प्रतीक बनकर अर्जुन के साथ थे। हनुमानजी अजर-अमर हैं, उन्हें चिरंजीवी माना गया है। इसका आध्यात्मिक अर्थ यह है कि भक्ति, सेवा, साहस, विनम्रता और निष्काम कर्म कभी मरते नहीं हैं। जब तक संसार में भक्ति है, सेवा है और धर्म है, तब तक हनुमान का अस्तित्व बना रहेगा। उनकी योग साधना आज भी निरंतर जारी है। वे आज भी उसी भाव से राम नाम में लीन हैं और संसार के कल्याण के लिए कार्य कर रहे हैं। हनुमानजी का जीवन हमें सिखाता है कि योग केवल शरीर को स्वस्थ रखने का अभ्यास नहीं है, योग जीवन जीने की कला है। योग का अर्थ है- मन का संयम, इंद्रियों का नियंत्रण, अहंकार का त्याग, कर्म में निस्वार्थता और हृदय में प्रेम। हनुमानजी इन सभी गुणों के अद्भुत समन्वय हैं। वे शक्ति के भी प्रतीक हैं, भक्ति के भी प्रतीक हैं और योग के भी प्रतीक हैं। यदि भक्ति योग का सर्वोच्च उदाहरण देखना हो तो हनुमान को देखना चाहिए। यदि कर्म योग का सर्वोच्च उदाहरण देखना हो तो भी हनुमान को देखना चाहिए और यदि योगी का सर्वोच्च उदाहरण देखना हो तो भी हनुमान से बड़ा उदाहरण मिलना कठिन है। उन्होंने संसार में रहकर भी संन्यासी का जीवन जिया। शक्ति के शिखर पर पहुंचकर भी विनम्रता नहीं छोड़ी और विद्वता के शिखर पर पहुंचकर भी स्वयं को राम का सेवक ही कहा। इस प्रकार हनुमानजी भक्ति योग, कर्म योग और ज्ञान योग- तीनों के अद्भुत समन्वय हैं। वे निस्वार्थ प्रेम, निष्काम सेवा और समत्व योग के सर्वोच्च आदर्श हैं। उनका जीवन हमें यह संदेश देता है कि सच्ची भक्ति वही है जिसमें सेवा हो, सच्चा कर्म वही है जिसमें अहंकार न हो और सच्चा योग वही है जिसमें मन, बुद्धि और आत्मा ईश्वर में समर्पित हो जाए।

हनुमान केवल एक देवता नहीं बल्कि एक जीवन दर्शन हैं। वे शक्ति हैं, वे भक्ति हैं, वे सेवा हैं, वे योग हैं। जो व्यक्ति हनुमान के जीवन को समझ लेता है, वह भक्ति का मार्ग भी पा लेता है, कर्म का मार्ग भी पा लेता है और योग का मार्ग भी पा लेता है। यही हनुमानजी की सबसे बड़ी महिमा है कि वे मंगलकर्ता भी हैं, विघ्नहर्ता भी हैं और जीवन को योगमय बनाने वाले महान गुरु भी हैं।

●●●

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

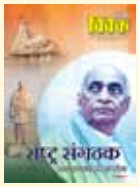

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय
प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067
सम्पर्क : +91 95949 91884
hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

युवा शक्ति का सही उपयोग राष्ट्र निर्माण की दिशा तय करता है। आवश्यकता इस बात की है कि समाज उन्हें उनकी शक्ति का बोध कराए क्योंकि हर युवा के भीतर एक हनुमान छिपा है, जो असम्भव को सम्भव बना सकता है।

प्रेरणा

समाज को बनना होगा जामवंत

भारत की मेधा युवाओं से परिपूर्ण है, सम्पन्न है, जागृत है, मेधावी है। भारत-भारती की आराधना के अक्षत युवा हैं, जिनके हाथों में राष्ट्रजागरण से राष्ट्र उदय तक की जिम्मेदारी है। वही 50 करोड़ से अधिक युवा जो राष्ट्रधर्म के बारे में समझकर राष्ट्र की दशा और दिशा परिवर्तित कर सकते हैं।

ऐसे युवा जिनके नाम के उलट में ही वायु यानी हवा का

वेग है, वह द्रुतगति से कार्य कर सकते हैं और असीम शक्तियों के भंडार ये युवा पवनसुत हनुमान की तरह अनंत लब्धि, ऊर्जा, सकारात्मकता, संगठन कौशल, समाज जागरण, राष्ट्रकार्य, नेतृत्व और राष्ट्रदेव की अर्चना कर सकते हैं। युवाओं के जागरण को केंद्र में रखकर समाज को अपनी भूमिका बनानी चाहिए क्योंकि समाज जब तक इन युवाओं को अपने सामर्थ्य का भान नहीं करवाएगा तब तक युवा अपनी अंनत शक्तियों से अनभिज्ञ बने रहेंगे, अत: समाज के ज्येष्ठ-श्रेष्ठ व्यक्तित्व जामवंत की भूमिका निभाते हुए युवाओं में हनुमंत शक्ति का जागरण करें।

हमारी पौराणिक गाथाओं में ऐसे अनेक प्रसंग हैं, जो आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने हजारों वर्ष पहले थे। हनुमान और जामवंत का प्रसंग इसी सत्य का जीवट उदाहरण है। यह केवल एक कथा नहीं है बल्कि मनुष्य के भीतर छिपी असीम सम्भावनाओं और उन्हें जागृत करने की प्रक्रिया का प्रतीक है। रामकथा के उस महत्वपूर्ण प्रसंग को स्मरण करें, जब माता सीता की खोज में समुद्र पार करने का दायित्व सामने आया। पौराणिक आख्यान अनुसार रामायण के सुंदरकांड में उल्लेखित है कि हनुमान जी किसी ऋषि के श्राप के कारण अपनी शक्तियों और लब्धि को भूल चुके थे, अपनी निधियों का उन्हें भी भान नहीं था और जब भगवती सीता की खोज में पूरी वानर सेना दक्षिण तट पर समुद्र पार करने के बारे में गहन चिंता में बैठी थी, तब अंगद इत्यादि योद्धाओं ने नैराश्य भाव से यह चिंता व्यक्त की कि हम कैसे समुद्र लांघकर माता जानकी के बारे में समाचार लाएंगे। तभी सब बंधु-बांधवों की चिंता को दूर करते हुए ब्रह्मपुत्र रीछराज जामवंत ने हनुमान जी को उनकी शक्तियों का भान करवाया और मानस में तुलसीदास जी लिखते है कि-

कहइ रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेहु बलवाना।।
पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना।।

यानी हे बलवान हनुमान! सुनिए, आप चुप क्यों हैं? आप पवनपुत्र हैं, बल में पवन के समान हैं और बुद्धि, विवेक व विज्ञान की खान हैं। साथ ही यह भी कहा कि-

कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं।।
राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्बताकारा।।

अर्थात जामवंत यह कहते हैं कि ऐसा कौन-सा कठिन काम है जो हे तात! तुमसे न हो सके। श्रीराम जी के कार्य के लिए ही

तो तुम्हारा अवतार हुआ है। यह सुनते ही हनुमानजी पर्वत के आकार के अत्यंत विशालकाय हो गए। इन दोनों घटनाओं का सीधा सम्बंध आज की युवा पीढ़ी के जागरण से हैं, युवाओं में कार्य करने की क्षमता तो है, पर सही दिशा नहीं मिलने के कारण वह भटक जाती है। यह प्रसंग केवल पौराणिक घटना नहीं बल्कि एक सार्वकालिक सत्य है। अधिकतर मनुष्य अपनी शक्ति को भूल जाते हैं और उन्हें किसी जामवंत की आवश्यकता होती है, जो उन्हें उनकी वास्तविक क्षमता का बोध कराए।

आज का भारतीय समाज भी कुछ इसी स्थिति में खड़ा है। महत्वपूर्ण यह है कि भारत विश्व का सबसे युवा राष्ट्र है। यह केवल जनसंख्या का आंकड़ा नहीं बल्कि एक ऐतिहासिक और सामाजिक आधार पर भी है। यदि इस युवा शक्ति को सही दिशा मिल जाए तो यह राष्ट्र को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकती है। विज्ञान, साहित्य, तकनीक, उद्यमिता, खेल इत्यादि हर क्षेत्र में भारतीय युवा अपनी पहचान बना सकता है। वर्तमान दौर के युवा अनेक झंझावातों से घिरे हुए हैं, प्रतिस्पर्धा, मानसिक तनाव, करियर की अनिश्चितता, परिवार की समस्याएं, भागदौड़ भरी जीवनशैली आदि। आज युवा अपनी दिशा को लेकर भ्रमित हैं, आत्मविश्वास की कमी से जूझ रहे हैं और अनेक बार तात्कालिक आकर्षणों में उलझकर अपनी सम्भावनाओं को खो देते हैं। ऐसे में यदि समाज केवल दोषारोपण करेगा तो युवा और अधिक निराश होंगे। इन युवाओं की खोज एक ऐसे मार्गदर्शक की है, जो उनके भीतर आत्मविश्वास जगाए, जो यह कहे तुममें सामर्थ्य है, तुम कर सकते हो। कथा भी यही समझाती है कि रीछराज जामवंत ने हनुमान जी को आदेश नहीं दिया था, उन्होंने प्रेरित किया था। यही अंतर है नेतृत्व और मार्गदर्शन में। आज परिवार, शिक्षक, समाज और राष्ट्र के जिम्मेदार वर्ग को यह समझना होगा कि युवा को आदेश नहीं, प्रेरणा चाहिए। नियंत्रण नहीं, विश्वास चाहिए। यह भी आवश्यक है कि हम युवाओं को केवल उपदेश न दें बल्कि अपने आचरण से उदाहरण प्रस्तुत करें। यदि हम चाहते हैं कि युवा अनुशासित, जिम्मेदार और राष्ट्रनिष्ठ बने तो हमें स्वयं भी इन मूल्यों का पालन करना होगा। जामवंत का प्रभाव इसलिए था क्योंकि उनके शब्दों में अनुभव और आचरण की शक्ति थी।

इसके साथ ही समाज को युवाओं को अवसर भी प्रदान करने होंगे। हर युवा के भीतर कुछ नया करने की इच्छा होती है, परंतु कई बार उसे उचित मंच नहीं मिल पाता। यदि हम उन्हें प्रयोग करने, असफल होने और पुनः प्रयास करने की स्वतंत्रता देंगे तो उनकी रचनात्मकता विकसित होगी। असफलता को कलंक नहीं बल्कि सीख के रूप में स्वीकार करना होगा।

राघव झा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ केवल राष्ट्र, हिंदू व सनातन की ही बात नहीं करता बल्कि वैश्विक नीतियों पर भी संघ का दृष्टिकोण सुलझा हुआ है। अमेरिका-इजरायल-ईरान के बीच चल रहे युद्ध पर भी संघ ने चिंता जताई और कहा कि भारत को युद्ध समाप्त करने में आगे आना होगा क्योंकि भारत ही पश्चिम एशिया में छिड़े युद्ध को समाप्त करा सकता है।

भूमिका

विश्व को टकराव नहीं सद्भाव की आवश्यकता

अमेरिका-इजरायल और ईरान युद्ध ने भारत की अर्थव्यवस्था, आयातित मुद्रास्फीति, रुपए पर दवाब और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान का संकट ला दिया है। यह संकट विशेष रूप से भारत की ऊर्जा सुरक्षा, उर्वरक आपूर्ति और व्यापार के लिए हैं, जिसका मुख्य कारण खाड़ी के तेल, एलएनजी और होर्मुज जलडमरूमध्य के माध्यम से उर्वरक आगत पर भारी निर्भरता है।

भारत को ऊर्जा विविधीकरण, रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार, नवीकरणीय ऊर्जा की ओर संक्रमण, घरेलू गैस उत्पादन और वैकल्पिक उर्वरक उपयोग को मजबूत करना चाहिए, साथ ही भू-राजनीतिक जोखिमों को कम करने के लिए व्यापारिक सुगमता और समुद्री मार्गों में सुधार करना चाहिए। संघर्ष के परिणाम जान-माल की हानि और आर्थिक क्षति के अलावा, इस युद्ध ने एक बार फिर ईरान और खाड़ी

देशों के बीच सम्बंधों को खराब कर दिया है। हालांकि हाल के वर्षों में जीसीसी देश विशेष रूप से यूएई और सऊदी अरब, ईरान के बीच अविश्वास रहा है, लेकिन सम्बंधों में सुधार शुरू हो गया था। बहरीन जिस पर ईरान ने आक्रमण किया है, वह शिया–बहुसंख्यक देश है, जहां सुन्नी शासक का शासन है और इस संघर्ष ने एक बार फिर शिया–सुन्नी विभाजन को उजागर कर दिया है। यूएई जैसे देश, जो अपनी आर्थिक क्षमता, भौगोलिक स्थिति और संघर्ष से अछूते रहने के कारण महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरे हैं, कम से कम अल्पकाल में झटकों का सामना कर सकते हैं।

युद्ध ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को बाधित कर दिया है। यह भारत के उच्च विकास दर और निम्न मुद्रास्फीति के सामंजस्य के लिए संकट उत्पन्न करता है। साथ ही यह भारत की रणनीतिक स्वायत्तता के लिए एक विदेश नीति सम्बंधी दुविधा भी उत्पन्न करता है क्योंकि भारत को अमेरिका–इजरायल और ईरान तीनों के साथ अपने सम्बंध बनाए रखने हैं। पश्चिम एशिया में युद्ध का दौर प्रारम्भ हो गया है। ईरान के समक्ष इजरायल और अमेरिका प्रतिद्वंदी बने लगातार आक्रमण कर रहे हैं। मिडिल ईस्ट में इस युद्ध को लेकर हलचल तेज है और वक्तव्यों एवं धमकियों का दौर भी जारी है। इसी बीच राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी का भी एक महत्वपूर्ण वक्तव्य सामने आया है। पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने 20 मार्च 2026 को नागपुर में विश्व हिंदू परिषद के विदर्भ प्रांत कार्यालय के शिलान्यास कार्यक्रम के दौरान आयोजित एक कार्यक्रम में पश्चिम एशिया (इजरायल–अमेरिका और ईरान) में जारी युद्ध पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज दुनिया मान रही है कि इस युद्ध को केवल भारत ही समाप्त कर सकता है। उन्होंने युद्ध को स्वार्थ और वर्चस्व की चाहत का परिणाम बताते हुए कहा कि विश्व को टकराव नहीं, सद्भाव की आवश्यकता है।

आज दुनिया में स्वार्थ के कारण युद्ध हो रहे हैं और भारत की प्राचीन संस्कृति (धर्म) में ही दुनिया को जोड़ने की क्षमता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत, एक तटस्थ और शांतिप्रिय राष्ट्र के रूप में, वैश्विक संघर्षों को सुलझाने में प्रमुख भूमिका निभा सकता है। युद्ध का समाधान भारत के पास है क्योंकि भारत शांति और एकता का संदेश देता है। दुनिया विनाश की ओर बढ़ रही है और भारत का उत्थान हो रहा है। उन्होंने दुनिया को जड़ बताते हुए कहा कि सबको जोड़े रखने का तत्व केवल भारत के पास है।

पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने जोर देकर कहा है कि भारत ही पश्चिम एशिया में छिड़े युद्ध को समाप्त करा सकता है। इन्होंने संयुक्त अरब अमीरात और फिनलैंड जैसे देशों का हवाला दिया जो पहले भी भारत को इजरायल–अमेरिका और ईरान युद्ध के बीच हस्तक्षेप करने की अपील कर चुके हैं। वास्तव में भारत के सम्बंध अमेरिका और इजरायल से बेहद मजबूत हैं। वहीं ईरान भी दशकों से कई पहलुओं पर भारत का करीबी साझेदार रहा है। यही कारण है कि दुनिया भारत को एक मजबूत माध्यम के रूप में देख रही है।

पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने धर्मांतरण पर भी खुलकर अपना पक्ष रखा है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि धार्मिक असहिष्णुता, जबरन धर्मांतरण और श्रेष्ठता और हीनता का विचार अभी भी उपस्थित है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए समाज को आगे आना होगा। लोगों को दैनिक व्यवहार में इनके विरुद्ध मुखरता से आवाज उठानी होगी, तब जाकर इन कुरीतियों से समाज को मुक्त किया जा सकता है। ज्ञातव्य हो कि इससे पूर्व भी कई अवसरों पर पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी जबरन धर्मांतरण को अवैध बताते हुए इसके विरुद्ध कार्रवाई की बात कह चुके हैं। स्थाई शांति केवल एकता, अनुशासन और धर्म के पालन से ही प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने जोर देते हुए यह भी कहा कि धर्म केवल शास्त्रों तक सीमित नहीं रह सकता बल्कि यह लोगों के व्यवहार में भी दिखना चाहिए। भारत में, धर्म के पीछे एक सामाजिक शक्ति होनी चाहिए क्योंकि धर्म केवल शास्त्रों में ही नहीं है, यह आचरण और वाणी के माध्यम से व्यक्त होता है।

पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने सोशल मीडिया पर सक्रियता बढ़ाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया है। उन्होंने कहा कि यह समय की मांग है और संघ को समाज के बीच अपनी उपस्थिति मजबूत करने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का अधिक उपयोग करना चाहिए। यह कदम अच्छे विचारों के प्रसार और सही जानकारी समाज तक पहुंचाने के लिए आवश्यक है।

सोशल मीडिया पर सक्रियता बढ़ाना अब केवल एक विकल्प नहीं बल्कि आवश्यकता है। संघ को अपने कार्यों, सेवा परियोजनाओं और राष्ट्रवादी विचारों को व्यापक स्तर पर प्रसारित करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करना चाहिए।

●●●

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्

दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक

सोने तारण कर्ज

जलद कर्ज

कमी प्रक्रिया शुल्क

व्याजदर

९.५०%* वार्षिक

* अटी व शर्ती लागू

TOLL FREE: 1800 233 1919 kalyanjanata.in KJSBank

युद्ध के दुष्परिणाम और समाधान

रंजीत कुमार

भारतीय अर्थव्यवस्था की अंदरूनी ताकत इतनी मजबूत है कि इसे घरेलू स्तर पर ही पैदा, मांग व आपूर्ति को पूरा करने में अपनी सारी क्षमताएं झोंक दें तो भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती बनी रह सकती है।

चुनौती

पिछले लगभग 1 महीने से चल रहे खाड़ी युद्ध के दौरान तेल कुओं और तेल भंडारों को ईरानी, अमेरिकी व इजराइली हवाई और मिसाइली आक्रमणों में भारी नुकसान पहुंचाया गया है और इस कारण से खाड़ी देशों से होने वाली पेट्रोलियम व कच्चा तेल की सप्लाई में भारी बाधा पैदा हुई है और विश्व स्तर पर पेट्रोलियम उत्पादों की कीमत में अभूतपूर्व उछाल देखने को मिला है। ईरान बनाम अमेरिका इस्राइल के बीच खाड़ी में चल रहे मौजूदा युद्ध के दौरान दुनिया भर में तेल सप्लाई पर प्रतिकूल असर पड़ा है, लेकिन भारत इस सप्लाई संकट से बचा हुआ है। इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन ने अपने बयान में देश को आश्वस्त किया है कि देश में पेट्रोल-डीजल का समुचित भंडार है। देश के पेट्रोल पम्पों पर सामान्य दिनों जैसा वातावरण देखा जा सकता है। विगत एक माह पहले ईरान पर हवाई हमले शुरु होने के बाद होरमुज जलडमरूमध्य से होकर जब तेल सप्लाई में बाधा पैदा हुई थी तब देश में अफवाहें फैली कि रसोई गैस व पेट्रोल की सप्लाई बाधित हो गई है जिससे लोगों में घबराहट फैली और लोगों ने एसपीजी गैस सिलेंडरों के लिए गैस दुकानों पर लम्बी कतारें लगा लीं। लेकिन सरकार ने अफवाहों के बाजार पर जल्द काबू पाया और पेट्रोल से लेकर गैस सप्लाई को सुचारू करने में सफलता पाई। हालांकि एलपीजी गैस के 60 रुपए प्रति सिलेंडर की कीमतें बढाई गईं लेकिन पेट्रोल -डीजल के दाम स्थिर रहे। भारत ने यहां तक कि पड़ोसी बांग्लादेश को पेट्रोल-डीजल की सप्लाई कर उसे संकट से ऊबरने में सहायता की, लेकिन पड़ोसी पाकिस्तान पेट्रोल-डीजल की सप्लाई में कमी होने के संकट से गुजरा और इसे पेट्रोल की कीमतों में भारी बढ़ोतरी करनी पड़ी, जिसकी मार से देश की आम जनता बुरी तरह कराह रही है।

ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंध उठ जाने के बाद भारत को ईरान से सीधे गैस टैंकर मिलने लगे हैं। होरमुज जलडमरूमध्य से गैस सप्लाई बाधित होने के बावजूद भारतीय टैंकरों को अनुमति मिल रही है। इस बारे में भारतीय प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री ने अपने ईरानी समकक्षों से संवाद बनाया हुआ है।

हालांकि इस कारण विशेषकर होटल व रेस्तरां आदि में व्यावसायिक गैस एलएनजी की सप्लाई में कमी अवश्य हुई और इस सेक्टर से जुड़े लोगों के रोजगार पर प्रतिकूल असर पड़ा है। जिस तरह बाकी दुनिया में पेट्रोल-गैस की सप्लाई प्रभावित होने से हाहाकार मचा वैसे हालात भारत में पैदा नहीं हो सके। पेट्रोल की दरें खाड़ी युद्ध शुरु होने के पहले 76 डॉलर की दर पर चल रही थी जो 100 डालर प्रति बैरल छू लेने के बावजूद भारत में घरेलू स्तर पर पेट्रोलियम मूल्यों को स्थिर रखा जा सका है।

लेकिन इस सच्चाई से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता है कि यदि खाड़ी युद्ध कुछ सप्ताह और चल गया तो इसका भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। भारतीय अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी कमजोरी अपना खुद का पेट्रोलियम संसाधन नहीं होना है। इस कारण आज तेजी से बढ़ती भारतीय अर्थव्यवस्था की पेट्रोल-गैस की मांग पूरी करने के लिए लगभग 87 प्रतिशत आयात करना पड़ता है। चूंकि इसके लिए भारत आयात पर ही निर्भर है इसलिए विश्व स्तर पर पेट्रोल-गैस की जो कीमतें चलेंगी भारत उससे नहीं बच सकता। साफ है कि भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति दुनिया में पेट्रोलियम सप्लाई और कीमतों पर काफी हद तक निर्भर करेगी। पेट्रोलियम उत्पादों के आयात बिल में बढ़ोतरी से न केवल चालू खाता घाटा बढ़ेगा बल्कि रुपए का अवमूल्यन होगा, राजकोषीय घाटा बढ़ेगा तथा समग्र विकास पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। खाड़ी के देश भारत के लिए एक बड़ा बाजार बन कर उभरे हैं और वहां पिछले साल 57 अरब डॉलर का निर्यात हुआ लेकिन ईरान पर अमेरिका-इसरायल के ताजा हमले के कारण खाड़ी के बाजार से मांग में कमी होने की आशंका व्यक्त की जा रही है। पेट्रोल- गैस के मूल्यों में भारी बढ़ोतरी आने वाले महीनों में बनी रहेगी इसलिए खाड़ी से आयात बिल में भी भारी बढ़ोत्तरी होने का अनुमान लगाया जा रहा है। मौजूदा खाड़ी युद्ध के दुष्परिणामों से बचने के लिए प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 7 अधिकार प्राप्त समितियों का गठन किया है, जो युद्ध का भारत पर पड़ने वाले असर, ऊर्जा आपूर्ति, आवश्यक जिंसों की सप्लाई की स्थिति आदि पहलुओं का आकलन करेगी और सरकार को इनसे बचने के उपाय सुझाएगी।

आपदा में अवसर लेकर आए सिलेंडर

हमारे यहां आपदाएं जब भी आती हैं अवसर लेकर ही आती हैं। बाढ़ हो या सूखा या लैंड स्लाइडिंग। सबमें स्वार्थी मतलबी इंसान अवसर ढूंढ ही लेता है। ये अवसर शुद्ध कमाई के होते हैं, जरूरतमंद इंसान का गला काटने के होते हैं।

आपदा में अवसर का सबसे बड़ा उदाहरण तो चाइना मेड कोविड था। कोरोना के उस दंश ने पूरी दुनिया को भयावह ढंग से आपदा ग्रस्त कर दिया था। अब चूंकि आपदा भीषण थी तो अवसर भी वैसे ही भीषण ईजाद कर लिए गए। कोविड के इंजेक्शन रेमडीसिविर तो लाखों में बिक गए, मरते क्या न करते जिनके पास नहीं थे वे खर्च हो गए कोविड खाते में। बड़े तो ठीक छोटे-छोटे अस्पतालों तक में बेड बिक गए। सर्दी, खांसी, बुखार की गोलियां कैप्सूल भी 10 गुना कीमत देने के बाद भी बाजार से गायब थे।

लाखों-करोड़ों खर्च के बाद भी ये चीन निर्मित आपदा लाखों लोगों को लील गई। चलो आपदा ने गिद्धों को अवसर यानी नोंचने के अवसर दे दिए, लेकिन इससे थोड़े समय पहले जो नोटबंदी हुई थी वह तो शुद्ध महामानव निर्मित आपदा थी। लाखों लोग सारे कामकाज छोड़कर इस कृत्रिम आपदा में अवसर तलाशने कमीज नहीं तो कमीज का कॉलर चलेगा। दे दाता के राम। लाखों करोड़ों लोगों को देखकर हमारे देश का एक बेरोजगार नेता भी फटी जेब लेकर लाइन में लग गया।

अस्तु, आपदाओं में अवसर के फ्लैशबैक में जाने से कुछ नहीं होना, चलो... हम तो नई आपदाओं की ओर चलते हैं। अब ये नई आपदा बलाएं क्या हैं? देशवासी भलीभांति जान रहे हैं। नई आपदा ईरान, अमरीका, इजरायल से आई है। इन आपदाओं से हमारा सीधे-सीधे या उल्टे-पुलटे भी कुछ लेना देना है ही नहीं। मुल्लों-यहूदियों और ईसाइयों की लड़ाई में हम क्यों दाल-भात में मूसलचंद बनें? पर ऐसा होता नहीं न। रूस-यूक्रेन लड़ें या इजरायल-ईरान या फिर पाकिस्तान-तालिबान। हमें तो हर मामले में घसीटा ही जाता है जैसे हम यूएनओ हों, हालांकि इतनी बड़ी-बड़ी आपदाओं में यूएनओ का कुछ भी अता-पता नहीं है। यूएन पता नहीं किस अवसर की खोज में कहां भटक रहा है। कोई विश्व ज्ञानी बताए। हमारे प्रधान मंत्री का मुंह खोलना ही विपक्षियों के लिए आपदा बन कर सामने आ जाता है। अभी 4 दिन पहले तेल, गैस के आसन्न संकट को देखते हुए प्रधान मंत्री जी ने सिर्फ संयम बरतने की सलाह भर दी। आपदा में अवसर तलाशने वालों ने संयम को संकट समझ लिया और गैस सिलेंडर के लिए देशभर में कतारें लग गईं- सुबह से रात तक की। जो लोग धुरंधर 2 की लाइन में लगे थे वे भी हमजा को छोड़कर हॉर्मूज के रास्ते आने वाले तेल गैस के जहाजों की ओर टकटकी लगाकर गैस सिलेंडर की लाइन में लग गए क्योंकि भाई भोजन तो सबसे ज्यादा जरूरी है न। घर में गैस सिलेंडर चल रहा है, पर नया भी भरवा कर रख लो, क्या पता... कल हो न हो। सिलेंडर जिन्हें कल तक कोई पूछता नहीं था, अब ब्लैक में दोहरी कीमतों में बिक रहे हैं। इस तरह आपदा में नए-नए अवसर ढूंढे जा रहे हैं। अभी गैस की आपदा तो बनाई गई थी, लेकिन साथ ही डीजल-पेट्रोल का भी कृत्रिम संकट पैदा कर बड़ी आपदा बना दी गई है जहां अवसर ही अवसर हैं शुद्ध कमाई के लिए। सुबह से गांव से लेकर शहरों, महानगरों तक पेट्रोल पम्पों पर डीजल, पेट्रोल, गैस की कतारें लम्बी होती जा रही हैं और अवसरवादी पम्प वाले चाहे जब खत्म की तख्ती टांग कर पम्प बंद कर देते हैं। जो भूरे काका दुनिया भर को चमकाते फिरते हैं वे अभी ईरानी मिसाइलों से फटी में आ गए हैं और आपदा के अवसर को एक ओर पटक डील की तैयारी में लग गए हैं। ईरान डील की मुद्रा में जरा भी नहीं है। वो अमरीका को खार्ग के मार्ग पर लाना चाहता है आपदाओं को बढ़ाने के लिए, जिससे अवसर ढूंढने वालों को मौका मिले। युद्ध चलता रहेगा, पर हम इस कृत्रिम अभाव से पैदा हुए अवसर से जूझते रहेंगे। आपदा में अवसर सबसे ज्यादा रूस के हिस्से में आ गए क्योंकि उसके पेट्रोल, डीजल, गैस डबल कीमत में खरीदे जा रहे हैं।

मुकेश जोशी

डॉ. नीतू गोस्वामी

रामनवमी के उपलक्ष्य में देशभर में सकल हिंदू समाज द्वारा विशेष तौर पर शोभायात्रा निकाली जाती है। जो सामाजिक एकता का संदेश देती है और ये मर्यादा पुरुष श्रीराम के दिव्य गुण को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से निकाली जाती है।

सामाजिक समरसता का प्रतीक शोभायात्रा

रामनवमी का पर्व पूरे भारतवर्ष में मनाया जाता है। यह पर्व भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। चैत्र मास में नवमी तिथि को भगवान राम का जन्म हुआ और इसी के उपलक्ष्य में यह पर्व प्रतिवर्ष हिंदुओं द्वारा सनातन परम्परा से आज तक मनाया जाता है। यह हिंदुओं का एक प्रमुख त्यौहार है। राम जन्मोत्सव को सभी सनातनी अपने-अपने ढंग से मनाते हैं। कोई इस अवसर पर रामायण पाठ करता है, कोई शोभायात्रा निकालता है, कोई अभिषेक करता है, कोई भजन संध्या करता है। इस अवसर पर स्थान-स्थान पर शोभा यात्राएं बड़े भव्य और दिव्य स्वरूप में निकाली जाती हैं। शोभायात्रा में भगवान की सुंदर-सुंदर झांकियां बैंड-बाजों और घोड़े गाड़ियों से युक्त धार्मिक जागरण और सद्भाव को बढ़ाने के उद्देश्य से परिपूर्ण होती हैं। रामनवमी पर शोभायात्रा निकालने का उद्देश्य मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के आदर्शों के प्रति समाज को प्रेरित करना है। यह आयोजन हिंदू एकता, संस्कृति के प्रसार, उत्साह और भगवान श्रीराम के दिव्य गुणों को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से निकाली जाती हैं। यह शोभायात्रा समाज में राम के आदर्शों को, धर्म परायणता और नैतिकता को पुनर्प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से युक्त होती है। इसका उद्देश्य समाज में सद्भाव एवं समरसता की भावना को प्रसारित कर परस्पर मेल मिलाप का अवसर प्रदान करना भी है। यह परम्परा सदियों से चली आ रही है, जिसे सकल हिंदू समाज एवं अन्य हिंदू संगठनों द्वारा जीवंत बनाए रखा जा रहा है। इस वर्ष भी अलग-अलग शहरों में इस मूल उद्देश्य को आत्मसात् करते हुए श्रीराम की भव्य शोभा यात्रा निकाली जा रही है। मुंबई, दिल्ली, हैदराबाद, नागपुर, जम्मू कश्मीर और मंडी सहित भगवान राम की झांकियां देशभर में शोभा यात्रा के साथ देखी जा सकती हैं। इस वर्ष भी इन शोभा यात्राओं में भगवान श्रीराम के रथ के साथ अनेक देवी-देवताओं की झांकियां, समाज में चल रहे समाजिक मुद्दे पर आधारित झांकियां व केसरिया ध्वज के साथ शोभायात्रा का भव्य स्वरूप दृष्टिगोचर हो रहा है। श्रीनगर के लाल चौक तक 36 साल बाद ऐतिहासिक शोभायात्रा निकाली जा रही है। सनातन संस्कृति शोभायात्रा के माध्यम से संदेश देने व प्रेरणा देने का कार्य कर रही है। हालांकि मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में रामनवमी पर शोभायात्रा के दौरान रंग में भंग डालने का प्रयास भी किया गया। कहीं रूकावटे पैदा की गई, कहीं पत्थरबाजी की गई, तो कहीं मारपीट कर दंगे-डर और आंतक फैलाने का प्रयास किया गया, परंतु पुलिस ने उनके नापाक मंसुबों को सफल नहीं होने दिया।

●●●

योगेश कुमार गोयल

नई तकनीक से हम स्मार्ट घर तो बना रहे हैं, लेकिन क्या हम उनमें रहने वाले मानव को सुरक्षित रख पा रहे हैं? समय आ गया है कि हम 'स्मार्ट लिविंग' से पहले 'सेफ लिविंग' की बात करें अन्यथा तकनीक के ये चमकते सितारे हमारे घरों को श्मशान बनाने में देर नहीं लगाएंगे।

आधुनिक तकनीक

सुविधाओं के पिंजरें में छिपी मौत

पिछले दिनों इंदौर में एक इलेक्ट्रिक कार की चार्जिंग के दौरान शॉर्ट सर्किट हो गया, जिसके कारण घर में भीषण आग लग गई और 8 लोग लोग जिंदा जल गए। शॉर्ट सर्किट के कारण घर की बिजली चली गई और इलैक्ट्रिक गेट खुल नहीं पाए। कहा जाता है कि घर का दरवाजा नई तकनीक का था और बिजली जाने के कारण डिजिटल लॉक खुला ही नहीं, जिससे घर के अंदर से लोगों को बाहर निकलने का अवसर ही नहीं मिला। यह दर्दनाक घटना केवल एक हादसा नहीं बल्कि आधुनिकता की उस अंधी दौड़ पर एक करारा तमाचा है, जहां हम सुविधाओं के नाम पर अपने घरों में 'मौत के सामान' इकट्ठा कर रहे हैं। 8 जिंदगियां, जिनमें एक 8 साल का मासूम बच्चा भी शामिल था, देखते ही देखते जिंदा जल गया। जिस घर को मानव अपनी सुरक्षा का सबसे बड़ा किला मानता है, वही घर तकनीक की खामियों के कारण एक 'गैस चैम्बर' और 'इलेक्ट्रिक तंदूर' बन गया। यह घटना चीख-चीखकर यही प्रश्न पूछ रही है कि क्या हम अपनी सुरक्षा को स्मार्ट गैजेट्स के भरोसे छोड़कर खुद को काल के गाल में धकेल रहे हैं?

तकनीक जब काल बन जाए: डिजिटल लॉक जानलेवा

यह तकनीक का वह काला चेहरा है, जिसे हम प्राय: 'लग्जरी' समझकर अनदेखा कर देते हैं। जब जान पर बन आती है तो एक-एक

सेकेंड महत्व रखता है। यदि आपका दरवाजा बिजली जाने पर मैनुअली (हाथ से) आसानी से नहीं खुलता तो वह दरवाजा नहीं, आपकी मृत्यु की दीवार है। अधिकतर लोग दिखावे में 'की-लेस' (बिना चाबी वाले) एंट्री सिस्टम तो लगवा लेते हैं, लेकिन 'इमरजेंसी एग्जिट' (आपातकालीन निकास) का कोई बैकअप प्लान नहीं रखते। कुछ ही महीने पहले इंदौर के ही उद्योगपति प्रवेश अग्रवाल की मौत भी इसी तरह के इलेक्ट्रॉनिक गेट के न खुलने के कारण दम घुटने से हुई थी। क्या हमने उससे कोई सबक लिया? कदाचित् नहीं।

भारत में इलैक्ट्रिक वाहनों को प्रदूषण कम करने के समाधान के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। सरकार सब्सिडी दे रही है, लोग पेट्रोल के बढ़ते दामों से बचने के लिए इसे अपना रहे हैं, लेकिन क्या हम इसके लिए तैयार हैं? यदि इंदौर की घटना की ही बात करें तो इलेक्ट्रिक कार घर के बाहर चार्ज हो रही थी। प्रश्न यह है कि क्या उस घर की वायरिंग हाई-वोल्टेज लोड सहने के योग्य थी? क्या वहां प्रयोग किया गया चार्जर और केबल मानक स्तर (आईएसआई) के थे? सामाान्य व्यक्ति को यह नहीं पता कि ईवी चार्जिंग के लिए किस तरह की अर्थिंग और एमसीबी/आरसीसीबी की आवश्यकता होती है। लोग इसे मोबाइल चार्जिंग की तरह हल्के में लेते हैं, जबकि यह एक उच्च क्षमता वाली विद्युत प्रक्रिया है। यदि शहरों में प्रत्येक 2 किलोमीटर पर सुरक्षित चार्जिंग स्टेशन की व्यवस्था हो जाए तो लोग तंग गलियों और घरों के बाहर असुरक्षित तरीके से गाड़ियां चार्ज करने को मजबूर नहीं होंगे।

आधुनिकता का भ्रम और इंटीरियर का जानलेवा शौक

इंदौर हादसे में आग केवल कार तक सीमित नहीं रही। घर के अंदर रखे 4 गैस सिलेंडर और 8 एयर कंडीशनर ने इस आग को भयावह विस्फोटों में बदल दिया। आज के दौर में घरों के इंटीरियर में सौंदर्य के लिए वेंटिलेशन (हवा के आवागमन) से समझौता किया जाता है। जब बाहर आग लगी तो एसी की गैस और कम्प्रेसर ने बम की तरह काम किया। एक ही घर में चार-चार सिलेंडर! क्या यह सुरक्षा मानकों का उल्लंघन नहीं है? आग लगने के बाद जब एसी और सिलेंडर फटने लगे तो स्थिति नियंत्रण से बाहर हो गई। आग बुझने के बाद 8 साल के बच्चे के शव को 'पोटली' में निकालना पड़ा। यह दृश्य किसी भी संवेदनशील समाज को शर्मसार करने के लिए काफी है। आजकल घरों के इंटीरियर में ऐसी सामग्रियों का उपयोग होता है, जो अत्यधिक ज्वलनशील होती हैं। फॉल्स सीलिंग, प्लास्टिक कोटिंग वाले तार, सिंथेटिक पर्दे और फोम के सोफे, ये सब आग लगने पर जहरीला धुआं छोड़ते हैं। सच्चाई यह है कि आग मानव को बाद में जलाती है, धुएं की घुटन और जहरीली गैसों से उसे पहले ही बेहोश या खत्म कर देती हैं। इंदौर की घटना में भी यही हुआ। बिजली जाने से अंधेरा छा गया, डिजिटल लॉक ने रास्ता बंद कर दिया और जहरीले धुएं ने लोगों को भागने या सोचने तक का अवसर नहीं दिया।

इस भयावह त्रासदी ने हमें चेतावनी दी है कि आधुनिक सुविधाओं के साथ सुरक्षा को अनदेखा करना घातक हो सकता है। सबसे पहले, डिजिटल लॉक का चयन करते समय यह सुनिश्चित करें कि उसमें मैनुअल ओवरराइड की सुविधा हो ताकि बिजली जाने पर भी दरवाजा आसानी से खोला जा सके। इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग के लिए अलग से हैवी-ड्यूटी वायरिंग, उचित अर्थिंग और एमसीबी जैसे सुरक्षा उपकरण अनिवार्य रूप से लगवाएं। गलत इंस्टॉलेशन बड़े हादसे का कारण बन सकता है। घर में कम से कम एक इमरजेंसी एग्जिट ऐसा होना चाहिए, जो किसी भी स्थिति में बिना बिजली के तुरंत खुल सके। इसके अलावा स्मोक डिटेक्टर और फायर एक्सटिंग्विशर को केवल सजावट न समझें बल्कि उन्हें सक्रिय और उपयोग के लिए तैयार रखें। सावधानी और जागरूकता ही ऐसी त्रासदियों से बचाव का सबसे मजबूत उपाय है।33

पितांबरी® ॲग्रो टूरिजम

चलो घूमने दुनिया की सैर करने!

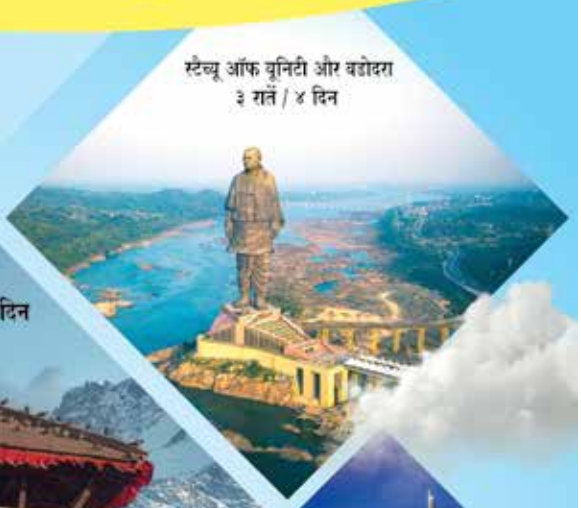

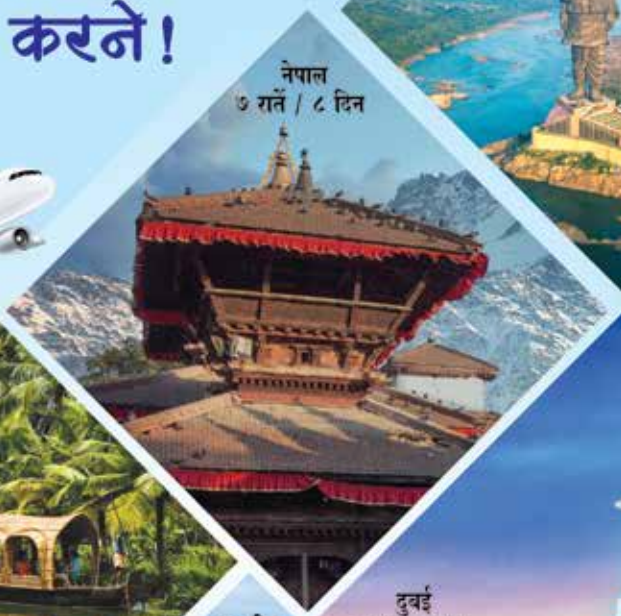

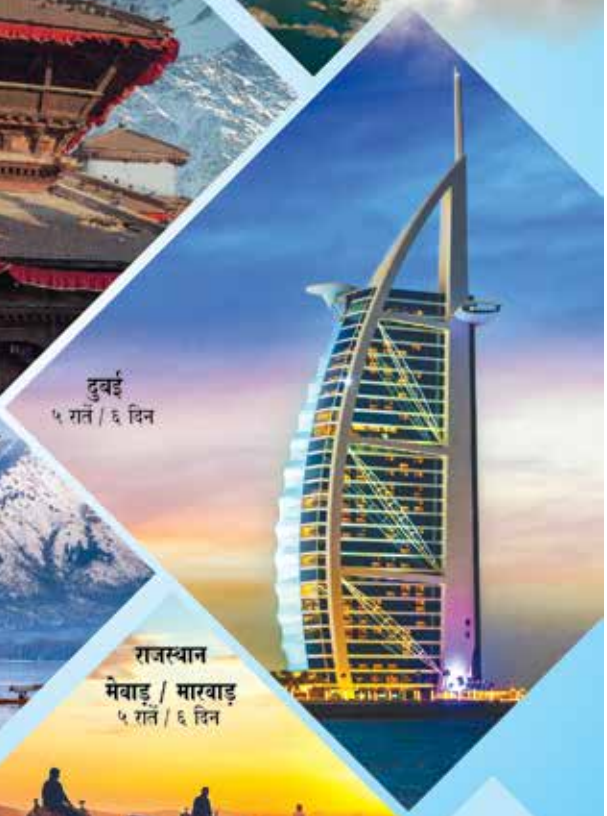

टूर में शामिल :

- एसी बस / गाड़ी में सफर और स्थानीय पर्यटन स्थलों की सैर
- ठहरने के लिए प्रीमियम होटल्स
- स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था
- जानकार गाइड और सभी प्रवेश टिकट

अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए संपर्क :
8828913131, 8657968481, 8530015838,
9702963400, 8657307352

लवकुश तिवारी

भगवान महावीर के आदर्शों को अपनाकर ही हम एक बेहतर और शांतिपूर्ण समाज का निर्माण कर सकते हैं। उन्होंने सत्य, अहिंसा और करुणा का मार्ग दिखाया, जिसपर चलकर हम समाज में सद्भाव और समरसता स्थापित कर सकते हैं।

महावीर जयंती- 31 मार्च

त्याग, करुणा और अहिंसा का संदेश

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्मकल्याणक 31 मार्च को अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह दिवस केवल एक धार्मिक पर्व नहीं बल्कि मानवता को सत्य, अहिंसा और करुणा का मार्ग दिखाने वाला प्रेरणादायक अवसर है। भगवान महावीर का जीवन त्याग, तपस्या और आत्मसंयम का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है, जो आज भी समाज के लिए मार्गदर्शक है।

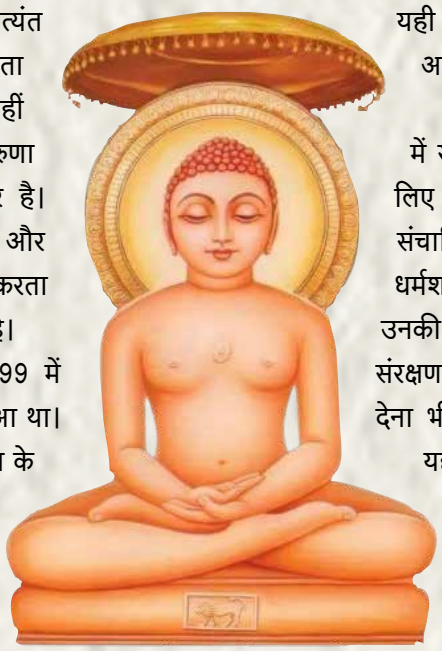

भगवान महावीर का जन्म ईसा पूर्व 599 में वैशाली के कुंडलपुर में एक राजपरिवार में हुआ था। बचपन से ही उनमें वैराग्य और आध्यात्मिकता के संस्कार स्पष्ट दिखाई देते थे। राजसी वैभव और सुख-सुविधाओं के बीच रहते हुए भी उनका मन संसार के मोह-माया से दूर था। 30 वर्ष की आयु में उन्होंने गृहत्याग कर संन्यास धारण किया और सत्य की खोज में निकल पड़े। उन्होंने लगभग 12 वर्षों तक कठोर तपस्या, ध्यान और आत्मसंयम का अभ्यास किया। अंततः उन्हें 'कैवल्य ज्ञान' की प्राप्ति हुई, जिसके बाद उन्होंने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण मानव कल्याण और धर्म प्रचार में समर्पित कर दिया।

जैन धर्म के मूल सिद्धांत- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह-भगवान महावीर की शिक्षाओं के सार हैं। उन्होंने 'अहिंसा परमो धर्मः' का संदेश देकर यह बताया कि किसी भी जीव को मन, वचन और कर्म से कष्ट पहुंचाना अधर्म है। उनका मानना था कि सभी जीवों में आत्मा होती है और प्रत्येक जीव का जीवन उतना ही मूल्यवान है जितना मनुष्य का। यही कारण है कि जैन समाज 'जीव दया' को अपने जीवन का प्रमुख आधार मानता है।

जैन समाज परोपकार और सेवा के क्षेत्र में सदैव अग्रणी रहा है। वे जीवों की रक्षा के लिए गौशालाएं, पक्षीशालाएं और जीवदया केंद्र संचालित करते हैं। जरूरतमंदों के लिए अन्नछत्र, धर्मशालाएं और अस्पतालों की व्यवस्था करना उनकी सेवा भावना का परिचायक है। पर्यावरण संरक्षण, जल बचाव और शाकाहार को बढ़ावा देना भी उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा है। वे यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि उनके किसी भी कार्य से प्रकृति या जीव-जंतुओं को हानि न पहुंचे।

भगवान महावीर का जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा सुख बाहरी भौतिक साधनों में नहीं बल्कि आत्मिक शांति और संतोष में निहित है। आज के भौतिकवादी युग में जहां मनुष्य लालच, हिंसा और असहिष्णुता की ओर बढ़ रहा है, वहां महावीर के सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं। यदि हम अपने जीवन में अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह को अपनाएं तो न केवल व्यक्तिगत जीवन में शांति आएगी बल्कि समाज में भी सद्भाव और समरसता स्थापित होगी। महावीर जन्मकल्याणक का यह पावन पर्व हमें आत्मचिंतन का अवसर देता है। यह दिन हमें प्रेरित करता है कि हम अपने व्यवहार में सुधार लाएं, दूसरों के प्रति सहानुभूति रखें और सभी जीवों के प्रति करुणा का भाव विकसित करें।

प्रवीण सिन्हा

विश्व के सबसे महंगे क्रिकेट लीग इंडियन प्रीमियर लीग की शुरुआत के साथ ही क्रिकेटप्रेमियों के बीच एक उत्सव सा वातावरण बन चुका है। जैसे-जैसे मुकाबले आगे बढ़ेंगे, 10 टीमों के शीर्षस्थ क्रिकेटरों के बीच बढ़ती प्रतिद्वंद्विता, आतिशी बल्लेबाजी, करिश्माई गेंदबाजी और हैरतअंगेज फील्डिंग आईपीएल के इस महामंच को महामेले के रूप में बदल देगी।

आईपीएल

महासंग्राम का बजा बिगुल

देश के कोने-कोने में आईपीएल की शुरुआत के साथ ही कितने ही क्रिकेटरों की स्वपनिल राहें खुलेंगी तो कितनों के सपने टूटने का सिलसिला शुरू हो जाएगा। नए सितारे धूमकेतु की तरह उभरेंगे तो पुराने सितारे अस्ताचल की ओर कूच करते दिखेंगे। अस्तु, पिछले 18 संस्करणों की तरह इस बार भी पूरी सम्भावना है कि आईपीएल विश्व की ज्यादातर टीमों को नए स्टार खिलाड़ी पैदा करके देगा। भारत ने यदि लगातार दूसरी बार टी20 विश्व कप जीता है तो उसके पीछे आईपीएल का बहुत बड़ा योगदान रहा है। दुनिया भर के धुरंधर खिलाड़ियों का भी इतिहास खंगाला जाए तो उनमें से ज्यादातर आईपीएल की पौध के रूप में विकसित हुए हैं। इस बीच आईपीएल 2026 के नए सत्र के लिए सारी फ्रेंचाइजी टीमें कड़े अभ्यास सत्रों के साथ नई-नई रणनीतियां तैयार करने में लगी हैं। विराट कोहली, हार्दिक पांड्या, श्रेयस अय्यर, ऋषभ पंत, जसप्रीत बुमराह, अर्शदीप सिंह सहित युवा स्टार अभिषेक शर्मा, प्रियांश आर्या, शिवम दूबे, प्रभसिमरण सिंह अनेक स्टार खिलाड़ी कठिन अभ्यास में जुटे हुए हैं।

वैसे, अब तक मुंबई इंडियंस और चेन्नई सुपर किंग्स 5-5 बार खिताब जीत आईपीएल की सफलतम टीमें हैं, लेकिन आईपीएल में प्रतिस्पर्धा और युवा खिलाड़ियों का स्तर इतनी तेजी से आगे बढ़ा है कि विजेता टीम का अनुमान लगा पाना बहुत कठिन है। पिछली बार रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) का पहली बार आईपीएल खिताब जीतना और उपविजेता रही पंजाब किंग्स का शानदार प्रदर्शन सिद्ध करता है कि अब आप एक सशक्त टीम तैयार कर विजेता नहीं बन सकते हैं। युवा खिलाड़ियों का जोश व निर्भीक अंदाज और नित नए-नए प्रयोगों के दम पर कोई भी टीम किसी भी समय उलटफेर करने में सक्षम है। आईपीएल में पारम्परिक क्रिकेट की महत्ता कम होती जा रही है। सूर्यकुमार यादव, हार्दिक पांड्या, ईशान किशन, ऋषभ पंत और अभिषेक शर्मा जहां नए-नए शॉट लगाने पर भरोसा रखते हैं तो विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, के एल राहुल, शिवम दूबे और यशस्वी जायसवाल जैसे बल्लेबाज आक्रामकता के साथ पारम्परिक शॉट्स लगा टीम की नैया पार लगाते हैं।

फटाफट क्रिकेट के संस्करण के रूप में स्थापित टी20 क्रिकेट में हमेशा बल्लेबाजों का बोलबाला रहा है, लेकिन आईपीएल के पिछले 18 संस्करणों पर ध्यान दें तो पाएंगे कि दर्जनों ऐसे गेंदबाज रहे हैं जिन पर रन बनाना कभी आसान नहीं रहा। कारण साफ है कि अनेक धुरंधर गेंदबाज अपनी तरकश से नए तीर निकालते रहते हैं। उनकी गेंदों की गति व दिशा को पढ़ना कभी आसान नहीं रहता।

वैसे सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) की टीम शुरू से ही छुपे रूस्तम के रूप में जानी जाती है। अब तक 2 बार की आईपीएल विजेता एसआरएच की ताकत कप्तान पैट कमिंस सहित अभिषेक शर्मा, ट्रैविस हेड और ईशान किशन की विस्फोटक तिकड़ी है जो किसी भी आक्रमण की धज्जियां उड़ाने का दमखम रखती है। इनके साथ हेनरी क्लासेन, लियाम लिविंगस्टोन और नितीश रेड्डी जैसे बेहतरीन खिलाड़ी टीम को मजबूती प्रदान करने में सक्षम हैं। एसआरएच एक मजबूत टीम के रूप में उभर सकती है और वह आईपीएल इतिहास में 300 रनों का आंकड़ा पार करने वाली पहली टीम बन जाए तो आश्चर्य नहीं होगा।

एक भारतीय आत्मा फिर याद आए

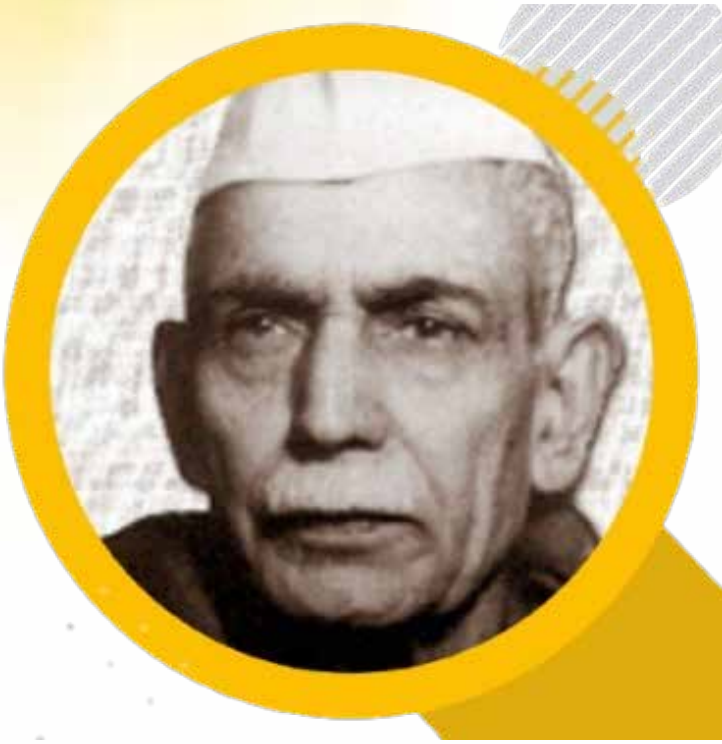

पंडित माखनलाल चतुर्वेदी हिंदी साहित्य के छायावाद युग के प्रमुख कवियों में से एक थे। उनकी कविताओं में राष्ट्रप्रेम, त्याग, बलिदान आदि प्रमुखता से दिखाई पड़ती है।

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।।

पंडित माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल, 1889 को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई नामक गांव में हुआ था। इन्हें एक भारतीय आत्मा के नाम से जाना जाता है। वे विलक्षण बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। एक कवि, गद्यकार, पत्रकार, वक्ता, कर्मवीर और कर्मठ व्यक्तित्व वाले भारतीय थे।

देश की स्वतंत्रता और रामराज्य की कल्पना के अनुरूप समाज रचना के लक्ष्य के प्रति उनके जीवन की हर सांस सम्पूर्णतः समर्पित थी। अहिंसा आंदोलन में सक्रिय भाग लेकर अंग्रेजी राज के कारागृहों की यातनाएं उन्होंने बरसों तक सही। कारावास के कष्टों ने उनके कवि-मन को गहरी अनुभूतियां दीं। जिससे उन्होंने साहित्य चेतना को नए आयाम दिए और पत्रकारिता को तीखे तेवर दिए। वे अपने दायित्व बोध को बखूबी समझते थे और उसे पूरा सम्मान भी देते थे।

एक बार उन्होंने कहा था -

हम फक्कड़, सपनों के स्वर्गों को लुटाने निकले हैं इस दुनिया में। किसी की फर्माइश के जूते बनाने वाले चर्मकार नहीं हैं हम।।

यह निर्भीक पत्रकारिता उनके मूल में थी। वे प्रख्यात कवि और साहित्यिकार थे, परंतु अपने कवि और साहित्यकार को उन्होंने अपने पत्रकार पर हावी नहीं होने दिया।

माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने जीवन को जिन सिद्धांतों के लिए समर्पित किया, जीवन पर्यंत उस पर स्थाई रहे। उनकी दृष्टि से जीवन का हर कर्म राष्ट्रोन्मुखी था। छायावाद की कोमलकांत पदावली वाले युग में उनके काव्य का ऐसा ओज भरा प्रवाह रहा, कि जिसने पूरे देश को राष्ट्रीय भावना से भर दिया। ओज से भरी पंक्तियों का प्रभाव भी ओजस्वी ही था। यथा -

वाणी, वीणा और वेणी की त्रिवेणी धार बोले।
नृत्य बोले, गीत बोले, मूर्ति बोले, प्यार बोले।।
आज हिमगिरि की पुकारों सिंधु सौ-सौ बार बोले।
आज गंगा की लहर में प्रलय का व्यापार बोले।।

राष्ट्र प्रेम की अमर ज्योति जन-जन में फैलाने वाले इस राष्ट्रीय कवि का राष्ट्रप्रेम अद्भुत था। इनकी प्रमुख रचनाओं में 'पुष्प की अभिलाषा', 'हिम किरीटिनी', 'हिम तरंगिणी', 'युग चरण', 'साहित्य देवता' आदि प्रमुख थे। इन्होंने काव्य के ओज से राष्ट्र प्रेम की अगाध भावना हर दिल में भरी। इन्हें 1955 में 'हिम तरंगिणी' के लिए पहला साहित्य अकादमी पुरस्कार (हिंदी) मिला।

उषा शर्मा 'प्रिया'

प्राचीन समय में बीमारियों या अचानक होने वाली घटनाओं के कारण स्पष्ट नहीं थे। इसलिए लोग इन्हें बुरी नजर से जोड़ देते थे। पीढ़ी दर पीढ़ी ये मान्यताएं चलती रहीं और समाज का हिस्सा बन गईं। आज भी विश्व में ये परम्पराएं चल रही हैं जो अति प्राचीन हैं।

टोटका

नजर उतारने की प्राचीन परम्पराएं

नजर उतारने की परम्परा मानव सभ्यता जितनी ही पुरानी मानी जाती है। यह विश्वास इस धारणा पर आधारित है कि किसी व्यक्ति की ईर्ष्या, द्वेष या अत्यधिक प्रशंसा से उत्पन्न बुरी नजर दूसरे व्यक्ति को हानि पहुंचा सकती है। इसी कारण विभिन्न समाजों में इस नकारात्मक प्रभाव से बचने के लिए अनेक प्रकार की विधियां विकसित हुईं, जिन्हें सामान्यतः नजर उतारना कहा जाता है।

प्राचीन काल की सभ्यताओं में भी इस परम्परा के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं। प्राचीन मिस्त्र सभ्यता में होरस की आंख को सुरक्षा का प्रतीक माना जाता था। लोग इसे ताबीज के रूप में धारण करते थे, ताकि बुरी शक्तियों और दृष्टि से बचाव हो सके। इसी प्रकार मेसोपोटामिया सभ्यता में भी बुरी नजर का भय व्यापक था। वहां मिट्टी, पत्थर या धातु के विशेष ताबीज बनाए जाते थे, जिन्हें पहनने से नकारात्मक प्रभावों से सुरक्षा होती है, ऐसा माना जाता था। भारतीय परम्परा में भी नजर उतारने के अनेक तरीके प्रचलित हैं। छोटे बच्चों को बुरी नजर से बचाने के लिए काला टीका लगाया जाता है, घर हो या दुकान सबके बाहर नींबू-मिर्च टांगे जाते हैं और नमक, सरसों या मिर्च से नजर उतारने की विधियां अपनाई जाती हैं। यह सभी उपाय आज भी ग्रामीण और शहरी दोनों समाजों में व्यापक रूप से प्रचलित हैं। इनका उद्देश्य व्यक्ति को अदृश्य नकारात्मक प्रभावों से सुरक्षित रखना माना जाता है।

यदि वैश्विक परिदृश्य पर दृष्टि डालें तो यह परम्परा लगभग हर संस्कृति में किसी न किसी रूप में विद्यमान है। तुर्की में नीली आंख वाला ताबीज नजर बट्टू अत्यंत लोकप्रिय है। ग्रीस और इटली में ईविल आई से बचने के लिए विशेष प्रतीकों और आभूषणों का प्रयोग किया जाता है। मध्य-पूर्व में हाम्सा नामक ताबीज हाथ के आकार का होता है, जिसे सुरक्षा का प्रतीक माना जाता है। लैटिन अमेरिका में भी बच्चों को बुरी नजर से बचाने के लिए विशेष धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं। इन सभी उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि नजर उतारने की परम्परा वैश्विक स्तर पर एक समान भाव के साथ विकसित हुई है।

यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि यह परम्परा इतनी प्राचीन क्यों है और आज भी क्यों प्रचलित है? इसका एक प्रमुख कारण मानव मनोविज्ञान है। मनुष्य स्वभावतः सामाजिक प्राणी है और उसमें तुलना, ईर्ष्या तथा प्रतिस्पर्धा की भावनाएं विद्यमान

रहती हैं। जब कोई व्यक्ति अत्यधिक सुखी, समृद्ध या आकर्षक प्रतीत होता है तो दूसरों की नकारात्मक भावनाएं उसके प्रति उत्पन्न हो सकती हैं। नजर उतारने का अर्थ इतना ही है कि इससे हमारा औरा स्वच्छ एवं मजबूत होता है जिससे हमें सुखद एहसास होता है। प्राचीन काल में जब विज्ञान का विकास नहीं हुआ था, तब अचानक होने वाली बीमारियों या दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं को लोग बुरी नजर से जोड़ देते थे। यही विश्वास धीरे-धीरे परम्परा का रूप लेता गया।

इसके अतिरिक्त यह परम्परा सामाजिक और सांस्कृतिक निरंतरता का भी प्रतीक है। पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही मान्यताएं लोगों के जीवन का हिस्सा बन जाती हैं। परिवार के बुजुर्ग जब इन विधियों को अपनाते हैं तो नई पीढ़ी भी उन्हें अपनाती है, जिससे यह परम्परा जीवित रहती है। वर्तमान समय में भी जब विज्ञान ने बहुत प्रगति कर ली है, तब भी लोग इन परम्पराओं को पूरी तरह त्याग नहीं पाए हैं क्योंकि यह उन्हें मानसिक संतोष और सुरक्षा की भावना प्रदान करती हैं।

अब प्रश्न उठता है कि क्या नजर उतारना मात्र एक मिथक है या इसके पीछे कोई वास्तविक ऊर्जा का सिद्धांत कार्य करता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बुरी नजर का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यह सिद्ध नहीं हुआ है कि किसी व्यक्ति की नजर से कोई भौतिक या जैविक हानि होती है। अतः इसे एक प्रकार की लोक-मान्यता या अंधविश्वास माना जा सकता है, परंतु दूसरी ओर, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह परम्परा कुछ सकारात्मक प्रभाव भी उत्पन्न करती है। जब किसी व्यक्ति की नजर उतारी जाती है तो उसे यह विश्वास होता है कि वह अब सुरक्षित है। यह विश्वास उसके मानसिक तनाव को कम करता है और आत्मविश्वास बढ़ाता है। परिवार के सदस्यों द्वारा किए गए ऐसे अनुष्ठान व्यक्ति को भावनात्मक समर्थन प्रदान करते हैं, जिससे वह अधिक सुरक्षित और संतुलित अनुभव करता है। इस प्रकार भले ही नकारात्मक ऊर्जा का कोई वैज्ञानिक प्रमाण न हो, परंतु सकारात्मक ऊर्जा के रूप में मानसिक शांति और संतोष अवश्य प्राप्त होता है।

नजर उतारने की क्रियाएं प्रतीकात्मक भी होती हैं। जैसे मिर्च जलाना, नमक घुमाना या ताबीज पहनाना- ये सभी क्रियाएं व्यक्ति के मन में यह भावना उत्पन्न करती हैं कि नकारात्मक प्रभाव समाप्त हो गया है। इसे अनुष्ठानिक उपचार के रूप में भी समझा जा सकता है, जहां वास्तविक परिवर्तन व्यक्ति के मन में होता है। ●●●

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

ईमेल - hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483

भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

डॉ. राकेश भट्ट

हरिहरन ऐसे गायक हैं, जिन्होंने भारतीय संगीत की विविध धाराओं को जोड़ने का कार्य किया है। गजल की कोमलता, शास्त्रीय संगीत की गहराई और फिल्मी गीतों की लचक इन तीनों को उन्होंने अपनी आवाज में समाहित किया है।

जन्मदिन- 3 अप्रैल

सुरों के गहरे साधक हरिहरन

भारतीय संगीत जगत में यदि किसी आवाज ने शास्त्रीयता, गजल और फिल्म संगीत के बीच एक सहज सेतु बनाया है तो वह नाम है- हरिहरन। उनकी गायकी में भावों की गहराई, सुरों की शुद्धता और अभिव्यक्ति की अद्भुत क्षमता देखने को मिलती है, जिसने उन्हें समकालीन संगीत के सबसे विशिष्ट गायकों में स्थापित किया है। उनकी मखमली आवाज, आरोह-अवरोह का कमाल का नियंत्रण बहुत विरल व अद्भुत है।

प्रारम्भिक जीवन और संगीत साधना

हरिहरन का जन्म 3 अप्रैल 1955 को मुम्बई में हुआ। उनके पिता एच. ए. एस. मणि दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत (कर्नाटक संगीत) के विद्वान थे, जबकि उनकी माता अलमेलु भी एक प्रसिद्ध गायिका थीं। इन्हीं सकारात्मक परिस्थितियों के सापेक्ष हरिहरन ने अपना शानदार सांगीतिक व्यक्तित्व निर्मित किया। बचपन से ही संगीत का गहरा संस्कार उन्हें विरासत में मिला। प्रारम्भिक शिक्षा के साथ-साथ उन्होंने कर्नाटक संगीत की विधिवत शिक्षा ली, जिसने उनकी आवाज को मजबूत आधार प्रदान किया। हरिहरन ने 1970 और 80 के दशक में गजल गायन के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई। उनकी गजलों में न केवल शब्दों की कोमलता बल्कि सुरों की संवेदनशीलता भी झलकती है। उनकी प्रसिद्ध गजलों में- झूम ले, कौन सा दरिया, हजारों ख्वाहिशें जैसी रचनाएं शामिल हैं। उन्होंने गजल को एक नए रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें पारम्परिकता के साथ आधुनिकता का संतुलन दिखाई देता है। युवाओं के बीच गजल जैसी अलोकप्रिय विधा को लोकप्रियता के शिखर तक ले जाने में उनका बड़ा योगदान माना जाता है। गजलों को आधुनिक कलेवर देने में तथा उन्हें आधुनिक संगीत उपकरणों के प्रयोग के साथ वेस्टर्नाइज कर उन्होंने गजल को एक अलग रंग दिया। अलग-अलग शायरों की गजलों को आवाज देकर उन्होंने शायरों को लोकप्रियता प्रदान की।

फिल्म संगीत में योगदान

हरिहरन ने भारतीय फिल्म संगीत में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी आवाज ने कई यादगार गीतों को अमर बना दिया। कुछ प्रमुख गीत हैं। तू ही रे (फिल्म: बॉम्बे)- यह गीत उनके करियर का मील का पत्थर माना जाता है। उस दौर में तो कहा ये जाता था कि दर्शक इस गीत को ही सुनने, देखने के लिए फिल्म थिएटर में जाते थे। ऐसा लगता है (रिफ्यूजी), रोजा जानेमन (रोजा - हिंदी संस्करण) आदि बहुत से गीत हैं जो उनकी आवाज में पसंद किए गए। उनकी आवाज में एक विशेष प्रकार की भावुकता और गहराई है- जो प्रेम, विरह और संवेदनाओं को बेहद प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है।

पॉप और फ्यूजन संगीत

हरिहरन ने केवल पारम्परिक संगीत तक ही स्वयं को सीमित नहीं रखा। उन्होंने Colonial Cousins नामक बैंड के माध्यम से इंडी-पॉप और फ्यूजन संगीत में भी नया प्रयोग किया। इस बैंड में उनके साथ लेस्ली लुईस थे। उनका एलबम Krishna और अन्य रचनाएं युवाओं में बेहद लोकप्रिय हुईं। इस प्रयास ने भारतीय संगीत को वैश्विक मंच पर एक नई पहचान दिलाई।

समाज के सभी वर्गों की भागीदारी होनी चाहिए -शिवराजसिंह चौहान

अमळनेर। अक्षय कृषि परिवार व मंगळग्रह सेवा संस्था द्वारा संयुक्त रूप से विगत दिवस श्री मंगळग्रह मंदिर में भूमि सुपोषण इस राष्ट्रीय अभियान का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराजसिंह चौहान ने कहा चैत्र का महीना पवित्र है। हमारा हिंदू नव वर्ष प्रतिपदा से शुरु होता है। इसलिए हमें अपनी संस्कृति के प्रति जागरूक रहना चाहिए। इस अवसर पर उपस्थित लोगों में प. पू. स्वामी नृसिंह विजयेंद्र सरस्वती, रा. स्व. संघ के क्षेत्रीय कार्यवाह बाळासाहेब चौधरी, पद्श्री डॉ. सुभाष शर्मा, आदि मंच पर उपस्थित थे।

हिंदू सम्मेलन का आयोजन

पड़ोसी देशों में युद्ध जैसी स्थिति होने के बाद भी भारत में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण शांति बनी हुई है। सामाजिक सद्भाव ही मूल आधार है, यह वक्तव्य सम्मेलन के मुख्य वक्ता संकेत देशमुख ने दिया। विगत 22 मार्च को हिंदू सम्मेलन समिति, उंबन्या गणपती वस्ती, धायरी, द्वारा विशाल हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम पवन मेडिकल के पास पुणे महानगरपालिका के मैदान में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलित कर किया गया।

श्रीराम नव श्रीराम जन्मोत्सव समिति बीड द्वारा श्रीरामचंद्रजी की शोभायात्रा निकाली गई। जिसमें बीड शहर के लगभग 50000 रामभक्त सहित नगर सेवक व विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता उपस्थित थे। भगवान श्रीराम की शोभायात्रा अपने आराध्य दैव श्री कंकालेश्वर मंदिर से शुरु होकर विभिन्न मार्गों से होते हुए छत्रपति शिवाजी महाराज प्रतिमा शिवतीर्थ पर रात्रि दस बजे समाप्त हुई।

श्रीरामचंद्र इंस्ट्ट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, छत्रपति सम्भाजीनगर के प्रांगण में प्रभु श्रीराम मंदिर का निर्माण प्रायोजित है। मंदिर का शिलान्यास विगत 26 मार्च रामनवमी के अवसर पर किया गया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों में अध्यक्ष, कोर कमिटी अशोक गोयल, अध्यक्ष डॉ. सतीश कुलकर्णी, किशनलाल सराफ आदि कई गणमान्य उपस्थित थे।

अंगणगांव मंडल द्वारा 23 मार्च को विराट हिंदू सम्मेलन नागडे में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में महंत रमेशगिरीजी महाराज का लोगों ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया। सम्मेलन का शुभारम्भ दीपप्रज्वलन व भारत माता, छत्रपति शिवाजी महाराज, संभाजी महाराज की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया गया। सम्मेलन में सुवर्णामाई जमधडे, हेमलतातार्ई पिंगळे, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला कार्यवाह गंगाधरजी पगार सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

कल्याण में सहकारी क्षेत्र की अग्रणी संस्था द कल्याण जनता सहकारी बैंक के निदेशक मंडल का चुनाव 2025-2026 से 2030-2031 की अवधि के लिए निर्विरोध संपन्न हुआ। इस वर्ष, 2008 के बाद पहली बार बैंक के निदेशक मंडल का चुनाव हुआ। नई दिल्ली स्थित सहकारी चुनाव प्राधिकरण की स्वीकृति से चुनाव प्रक्रिया के परिणाम घोषित हुए हैं। जिनमें 12 सर्वसाधारण, 2 महिला और 1 अनुसूचित जाति/जनजाति के सदस्य सहित 15 निदेशक निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं। एड. संपदा कुलकर्णी का चुनाव अध्यक्ष पद पर किया गया।

TJSB SAHAKARI BANK LTD. MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

TJSBSociety App

A Smart Solution for Commercial & Housing Societies

: Benefits :

- Dues & Receipt Management
- Advance Data Management & Reporting
- Complaint Management System
- Maintenance Bill Payment via UPI and Payment Gateway

*T&C Apply

www.tjsb.bank.in | ✆ : 022-48897204